सभ्यता 'साधू' के ठेंगे पर

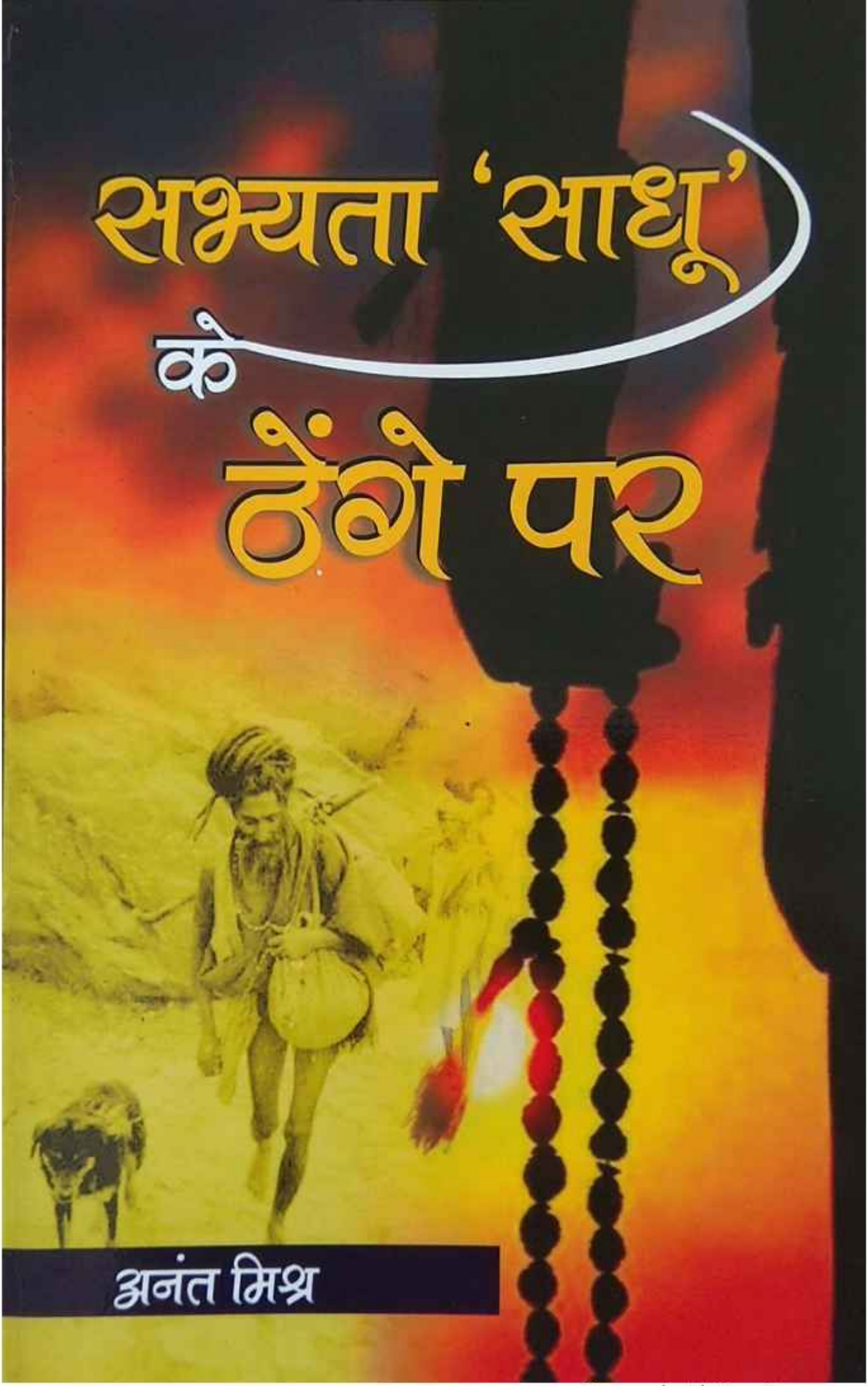

अनंत मिश्र

Scanned with CamScanner

सभ्यता 'साधू' के ठेंगे पर

अनन्त मिश्र

शिवालिक प्रकाशन
दिल्ली वाराणसी

Scanned with CamScanner

ISBN: 978-93-87195-54-7

प्रकाशक :
वीरेन्द्र तिवारी
शिवालिक प्रकाशन
27/16 शक्ति नगर
दिल्ली-110007
फोन : 011-42351161
ई-मेल : shivalikprakashan@gmail.com
शाखा कार्यालय
प्लॉट सं. 394, संजय नगर कालोनी
पहरिया, रामदत्तपुर, वाराणसी (उत्तर प्रदेश)

प्रथम संस्करण :
2018

© अनन्त मिश्र

शब्द संयोजन :
फ्रेंड्स ग्राफिक्स, संतनगर,
दिल्ली-84

मुद्रक :
आर. के. ऑफसेट प्रिंटर्स, दिल्ली

मूल्य : 225.00 रुपये

Sabhyata 'Sadhu' Ke Thenge Par
Anant Mishra

Scanned with CamScanner

समर्पण

दोनों पौत्रों
चि0 अचिन्त्य, अमात्र
और
पौत्री काश्यपी
के लिए

Scanned with CamScanner

अपने संग्रह के बारे में

प्रारम्भ में कविताएँ भावनाओं को व्यक्त करने के लिए लिखीं। कुछ प्रशंसाएँ सुनकर इस काम में इजाफा हुआ। मेरी अन्तरात्मा यह जानती है कि यशलिप्सा भी एक लिप्सा है और मुझे लिपसा पसंद नहीं। बचपन से ईश्वर ने मुझे यह गुण दे दिया था कि मैं लिप्सा न करूँ। चाहता बराबर रहा कि लोगों को कुछ दूँ। भरसक लेने की नौबत न आए पर हुआ उल्टा। अब नियति को बदल पाना मेरे लिए भी कठिन था।

पहला संग्रह 'एक शब्द उठाता हूँ' शीर्षक केदारनाथ सिंह के 'एक फूल उठाता हूँ' वाले मुहावरे से लिया गया है। बहरहाल मुझे इसका कोई संकोच न था, न है। बड़े कवियों की कुछ न कुछ नकल लोग करते हैं। महाकवि तुलसीदास ने जब संकोच नहीं किया तो मैं क्यों करूँ।

पहले संग्रह को भी निकालने की मेरी इच्छा नहीं थी। मेरे पुराने मित्र और रामभक्त डॉ. महेन्द्र नाथ पाण्डेय एक दिन मुझसे बोले कि कविताएँ भी बेटियाँ हैं, इन्हें समाज के लिए विदा करना पड़ता है। बात पते की थी। इसलिए पहला संग्रह प्रिय अनुजकल्प प्रेमव्रत तिवारी के सहयोग से विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी से छपा। इसके फ्लैग पर प्रसिद्ध कवि, रचनाकार और 'दस्तावेज' के सम्पादक मेरे घनिष्ठ ज्येष्ठ मित्र विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने लिखा।

दूसरा संग्रह 'हमारे समय में' विजया प्रकाशन दिल्ली, से मुस्तबहे में छप गया। हुआ यों कि, मेरा छोटा बेटा, अप्रमेय जो स्वयं एक कवि है, बहुत दिनों से मेरी कुछ कविताएँ मोबाइल में कैद करता रहा। यहाँ-वहाँ से कुछ कविताएँ निकालकर दिल्ली के मेरे अनुज मित्र

Scanned with CamScanner

ज्योतिष जोशी की प्रेरणा से किताब छपवा दिया और मेरे पौत्र अमात्र से एक दिन दिल्ली जाने पर 'सरप्राइज' के रूप में भेंट करा दिया। उसकी समीक्षा मेरे बड़े भाई डॉ0 रामदेव शुक्ल ने 'साहित्य अकादेमी' की पत्रिका में छपवाई। उन्होंने तो उसे एक पत्र के रूप में मेरे बेटे के पास भेजा था उसने उसे जोशी जी की मदद से समीक्षा के रूप में छपवा दिया।

कुल छपने का किस्सा इतना नहीं है। लिखने और छपने का सिलसिला तो छात्र जीवन से ही था पर उस समय मैं अखबारों और पत्रिकाओं में अपना नाम देखने के बचपनी इच्छाओं के कारण छपता था। वे सब प्राय: छन्द में, तुक में लिखी कविताएँ थी, जो अब मेरे पास भी उपलब्ध नहीं हैं।

असल में, मेरा मन-मानस जब 'कूकर' की तरह भावों, विचारों के भाप से भर जाता है तब कविताएँ लिखकर मन 'सेफ्टीवाल्व' की तरह इनका उपयोग करता है।

कविता से कुछ पाने की इच्छा न थी, न है पर फिर वही बात याद आती है कि यदि भाषा समाज ने दी है तो उल्टी-सीधी बातों वाली इन कविताओं को समाज को लौटाना भी चाहिए। इसलिए अब यह तीसरा संग्रह 'सभ्यता 'साधू' के ठेंगे पर'।

इस संग्रह के छपने में मेरे परिजनों, विशेषकर पुत्रों, मित्रों और शिष्यों का तगादा ही कारण है। मैं टंकणकर्त्ता अखिलेश कुमार शर्मा, प्रूफ देखने में मदद करने वाली कवयित्री अनिता अग्रवाल का भी ऋणी हूँ, जिन्होंने इसे अंजाम दिया।

प्रकाशक का ऋण तो कभी भरा नहीं जा सकता। अपनी दुनिया में बसे सभी लोगों के प्रति कृतज्ञता के साथ।

विनीत

9 दिसम्बर, 2018

अनन्त मिश्र

Scanned with CamScanner

भारतीय ऋषियों ने इस सृष्टि को देवता का काव्य (देवस्य काव्यम्) कहा है। यही मानवीय काव्य की भी जननी है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार संसार-सागर की रूप-तरंगों से ही मनुष्य के भाव और विचार पैदा होते हैं। अनन्त मिश्र एक भाव भरे कवि हैं। जिसमें भाव नहीं होता उसका कवि होना भी कठिन है। भाव ही शेष सृष्टि से राग संबंध बनाता है। अनन्त जी का रागात्मक संबंध फूल-पत्ती, वृक्ष-वनस्पति, पशु-पक्षी, चर-अचर सबसे है। सबसे वे कविता का रस खींचते हैं, जैसे भ्रमर फूलों से। वास्तव में कविता है भी मधु बनाने की प्रक्रिया। टी० एस० इलियट ने सही लक्ष्य किया है। अनन्त जी स्वभाव से कवि हैं। कविता उनका स्वधर्म है। वह उनके भीतर से अनायास फूटती है। इसी कवियों की तरह वे उसे प्रकाशन की चिन्ता भी नहीं करते। बल्कि स्वयं को व्यक्त करके मुक्त हो जाते हैं। आगे कविता को अपना काम करना चाहिए, कवि को नहीं। अनन्त जी का यह तीसरा संग्रह आपके हाथ में है। आप की अनुकूल-प्रतिकूल जो भी प्रतिक्रिया हो, उन्हें स्वीकार होगी। ऐसा मैं अनन्त जी के लम्बे साहचर्य के आधार पर कह सकता हूँ।

— विश्वनाथ प्रसाद तिवारी

विवरणिका

क्र.स.	शीर्षक	पृ.स.
	अपने संग्रह के बारे में	7
1.	सभ्यता 'साधू' के ठेंगे पर	15
2.	एक थे संत	17
3.	हमारा बूढ़ा भविष्य	19
4.	घरों में बूढ़े	20
5.	महाकुम्भ का दर्शन	22
6.	किसान और अन्य लोग	24
7.	चैत की दुपहरी	25
8.	बेबसी	26
9.	नहीं रह जाएंगे	27
10.	पेड़ पर इकट्ठा हैं कौवे	29
11.	बीतते दिन	31
12.	उसे नहीं पता था	32
13.	चैत में कुछ पेड़ों का संदेश	33
14.	इन दिनों	35
15.	एक रचना चलती नजर आएगी	36
16.	याद	37
17.	तोता	38
18.	प्रभु-दर्शन	39

Scanned with CamScanner

19.	चंद शेर	41
20.	वसंत-एक	42
21.	वसंत-दो	43
22.	मेरी खराब कविताएँ	44
23.	रात	46
24.	नश्वरता की भाषा	47
25.	उम्र के ढलान पर भी	48
26.	वेलनटाइन डे	49
27.	बड़े लोगों को आमंत्रण	51
28.	औरतों की यह भी एक बात-एक	52
29.	औरतों की यह भी एक बात-दो	54
30.	चीजें	55
31.	जीवन एक डर है	56
32.	विकास	58
33.	मर गई स्त्री	60
34.	ईश्वर को धन्यवाद	61
35.	कुछ-कुछ गायब हो जाता है साल दर साल	62
36.	जीवन-बोध-1	64
37.	जीवन-बोध-2	65
38.	कवि का संकट	66
39.	बानक और बाजार	68
40.	सड़क के भिखारी और भद्र लोग	69
41.	पृथ्वी का भाग्य-दुर्भाग्य	72
42.	अस्पताल	73
43.	शहर में बूढ़े	74
44.	कूड़ेदान में हम	75
45.	लिखना एक प्रार्थना है	76
46.	शहर में	78
47.	बची खुची आशा	79
48.	शहर में सेपहर	80

Scanned with CamScanner

49.	सत्य	83
50.	सेल्फी ले लें!	85
51.	खेल	87
52.	सुप्रभात	88
53.	दरिद्र	89
54.	मुहल्ले के बूढ़े	90
55.	तुमसे	92
56.	मध्यवर्ग का नरक	94
57.	आगे भी मौन रहूँगा	96
58.	निर्विकल्प	98
59.	घरों में आदमी	100
60.	आदमी और जानवर	101
61.	बूढ़ों से	103
62.	नई सदी में	104
63.	सावधान बच्चों!	106
64.	डर	107
65.	मूर्ख है वह	109
66.	प्रार्थना का प्रश्न नहीं	111
67.	छन्द-विचार	112
68.	वक्त	113
69.	छोटी सी इबारत	114
70.	चाँद और तुम	116
71.	माँ को फोन लगाओ	117
72.	गाँव से आए दिल्ली	119
73.	इस साल वसंत पंचमी के दिन	121
74.	बूढ़े	123
75.	एक चुनौती, सभ्यता के इस दौर में	125
76.	अपनी समझ में	127
77.	होली 2017	128
78.	शाश्वत	130

Scanned with CamScanner

	कबाड़ी	
79.	कविता से भी तूफान उठाने की इच्छा	131
80.	मरे हुए मित्रों की स्मृति के बाद	133
81.	विडम्बना	134
82.	रामबाण दवा	136
83.	मौन में ही उत्तर	137
84.	कवियों के बारे में एक खबर	139
85.	किताबें : एक और पहलू	140
86.	बड़े शहर में कामगार	141
87.	गीत	142
88.	शब्द	144
89.	बुढ़ापा	146
90.	सपना ही सही	147
91.	ए.टी.एम. मशीन के सामने भिखारी	148
92.	रस्सी की शाश्वतता	149
93.	कुछ शेर	152
94.	सत्तर साल से	154
95.	सफल लोगों के प्रति	155
96.	अच्छी कविता	158
97.	लौटने पर दुःख स्मृति	160
98.	चुप	161
99.	वह एक गाँव का गरीब आदमी	162
100.	चन्द तुक बन्दियाँ	163
101.	जीने के लिए	164
102.	सब्जी खरीदती औरतें	165
103.	ईश्वर करुणा निधान नहीं हैं	168
104.	दुनिया	170
105.	नदीं में बाढ़	172
106.	संतापराध	173
107.	पेंशन	174
108.		175

Scanned with CamScanner

सभ्यता 'साधू' के ठेंगे पर

कहीं से माँग-मूँगकर
लक्कड़ जुटा लिया
धूनी रमाने के लिए
गाँव के उपान्त पर
दिन डूबने के पहले
टिक गया एक 'साधू'
माँगकर लाये गए
आँटे से टिक्कर बनाया 'साधू' ने
जाड़े की रात में
जल्दी धुईं की ऊष्मा में
राख-पोतकर सो गया 'साधू'
अपने साथी के साथ,
'साधू' के पास कुछ नहीं है
सिवाय चिमटे
और कमण्डल के
'साधू' दिनभर का भूखा
अपने चेले साथी 'साधू' के साथ
टिक्कर खाकर सो गया
कल कहीं और चला जाएगा
भण्डारा खोजता
या टिक्कर, साग का इंतजाम करता

Scanned with CamScanner

चेले के साथ रमता
संत सुखी विचरन्त मही
का जाप करता,
किसी के दरवाजे पर
'साधू' आ सकता है
जटाजूट बढ़ाए, कम्बल कांख में दबाए
बच्चा! सेत्तराम, सेत्तराम कहता,
'साधू' दुनिया का
ऐसा प्राणी है
जिसके लिए सभ्यता ठेंगे पर है,
लोग भले ही 'साधू' को कुछ भी समझते हों,
वह अपने गुरु और भगवान के अलावा
किसी को कुछ नहीं समझता।

****

Scanned with CamScanner

एक थे संत

एक थे संत
जो कोई मिलने जाता था
एक सवाल पूछते थे
बच्चा! भोजन हो गया है?
हाँ बाबा!
सुनकर आश्वस्त हो जाते थे
और ना सुनकर बेचैन
सभ्य दार्शनिक चिंतक
खाए और अघाए
भद्र और तथाकथित पढ़े-लिखे लोग
चकित मुस्कान चेहरे पर लाते
और सोचते थे कि
यह क्या सवाल बाबा पूछते हैं?
अर्सा हुआ, बाबा नहीं रहे
यह सवाल अब मैं पूछ लेता हूँ यदा-कदा
किसी से
यह सही है कि ज्यादा-से-ज्यादा
मेरे मिलने-जुलने वाले लोग
हँसते हैं या तवज्जुह नहीं देते
पर मैं हर किसी से पूछना चाहता हूँ
यह सवाल

Scanned with CamScanner

और चाहूँगा कि इस देश की नहीं
दुनिया की पंचायत या संसद
एक-एक आदमी से पूछे यह सवाल
कि उसने भोजन किया है कि नहीं?

****

Scanned with CamScanner

हमारा बूढ़ा भविष्य

बहुत बूढ़ा आदमी
अपने ही परिजनों की चापलूसी-सा करता है
गो वह नहीं जानता कि
वह इसे क्यों कर रहा है
वह शरीक होना चाहता है
और हमेशा अपने को बाहर पाता है
वह धीरे-धीरे ऐसा जीता है कि
लोग उसके धीरेपन से इतना ऊब जाते हैं कि
उसके बारे में एक ही बात सोचते हैं कि
वह अब कितने दिन चलेगा।
बूढ़ा होना पृथ्वी की इबारत में
जिन्दगी की कुछ ऐसी पंक्तियों का नाम है
जिसे जुबान पर लाने में भी डर लगता है।
बूढ़े को खिलाया न जाए तो पाप
खिलाया जाए तो पाप
उसके पेट खराब होने का डर
उसके गिरने का डर
उसके कभी भी मरने का डर
उसके इर्द-गिर्द एक अवसाद का घेरा होता है
जो किसी भी दया के लिए नहीं हो सकता।
बूढ़ा हमारा भविष्य है
और जो इतना खराब है
कि वर्तमान भी दहशत में है।

****

Scanned with CamScanner

घरों में बूढ़े

घरों में बूढ़े असह्य होते जाते हैं
उनका लेटना, उठना, बैठना
थूकना, कपड़े पहनना
और बोलना
सब टोकने लायक है
हर जवान इसको अपना जन्मसिद्ध अधिकार मानता है
बूढ़े धीरे-धीरे अपनी भाषा को
लोगों की भाषा में नहीं मिला पाते
और अल्पमत होने के कारण
महसूस करने लगते हैं कि
शायद उनकी भाषा गलत
और दूसरों की भाषा सच है।
बूढ़ों का व्याकरण ठीक करते घरों के लोग
अपनी पुस्तकों को ही सही मानते हैं
और बूढ़े धीरे-धीरे
अपनी लुप्त होती भाषा और अपनी
मरने की संभावना से सहमत होते जाते हैं
बूढ़े घरों में फेंके जाने योग्य बरतन
मेज और फूलदान की तरह
जीवित रहने की विवशता के साथ पड़े रहते हैं
काल उन्हें मिटाएगा

Scanned with CamScanner

पर वे कितनी ही बार उसके पहले मिट चुके होते हैं,
बूढ़ों से कोई नहीं करता प्यार
सिवाय थोड़े से छोटे बच्चों के
जो बूढ़ों को खेलने की चीज समझकर
उनसे प्यार करते हैं।

****

Scanned with CamScanner

महाकुम्भ का दर्शन

कुंभ मुझे मुकम्मल काव्य की तरह लगा
झंडे पताके
'साधू' और भक्त
गठरियाँ लिए आदमी
और औरतें
यहाँ वहाँ घूमने वाले कुत्ते
और गाड़ियाँ
माला, फूल प्रसाद के ठहर
सब जैसे मुक्ति के लिए
उद्दाम संकीर्तन कर रहे हों
कुंभ में गंगा
और बालू के तट
जगह-जगह पंडों के विभित्र झंडे
निशान
अनवरत चलते प्रवचन
खोए हुए व्यक्तियों, बच्चों, स्त्रियों
और लोगों की सूचनाओं के
लाउडस्पीकर पर नाम
सब जैसे मुक्त हो रहे थे
जैसे कविता में आकर मुक्त होते हैं शब्द
उसी तरह सब कुछ वहाँ मुक्त होता

Scanned with CamScanner

लग रहा था।
रात को जगमगाते पंडाल
टेंटों में जलती बत्तियाँ
महाविराट आवाजाही के शोर
और पुलिस की गाड़ियाँ
कुंभ कोई कुंभ नहीं रह गया था
स्वर्ग के अमृत का
ब्रह्मांड की श्रद्धा का
कोलाहल करता सागर हो रहा था
कुंभ ऊर्ध्वगमन कर रहा था
कुंभ महाचैतन्य की तरह संकीर्तन कर रहा था।
शिव की जटा से निकली गंगा
मनुष्यों की जटा में
समा रही थीं
शिव मुक्त हो रहे थे
और मनुष्य भी।
कुंभ एक महाकाव्य था
जिसमें अक्षर-अक्षर मनुष्यों के हृदय
महाकाल में परिणत हो रहे थे
कुंभ मुझे मुकम्मल काव्य की तरह लग रहा था
मैं पढ़ने लगा, और तरने लगा
बिना किसी तपस्या के।

****

Scanned with CamScanner

किसान और अन्य लोग

मिट्टी में फेंका किसान ने
अपना पसीना
मिट्टी में फेंका उसने अपना अन्न
मिट्टी में डाल दिया उसने
अपना बहुत सारा रुपया
अब मिट्टी पर है कि
उसमें से क्या फल निकलेगा?
मेरे समय और लोगों ने
अपने शब्द और करतब
हवा में उछाल दिए
और बड़े मजे में वे कर रहे हैं
उत्तम भोजन और शयन।

****

Scanned with CamScanner

चैत की दुपहरी

लंबे-लंबे दिन
काटने इनको बहुत कठिन
साँय-साँय दोपहर
पिपासा इसमें बहुत भरी
उड़ती धूल हवा में
बौरे आम चित्त उन्मन
किसको फोन करें
कि कुछ लग जाए फिर से मन
पढ़ने-लिखने से भी कोई
काम नहीं चलता
धन की चिन्ताओं से ज्यादा
भीतरतम निःस्वन।

****

Scanned with CamScanner

बेबसी

सब खेल है
तुम कहते हो
सब मोह है
यह भी तुम कहते हो
सब इच्छाएँ हैं
तुम कहते हो
सब माया है
यह तो बहुत पुराना राग
पर क्या करूँ
इन्हीं में जीता हूँ
और इनसे मुक्ति के उपाय भी
इन्हीं सच्चाइयों से करता हूँ।

****

सभ्यता 'साधू' के ठेंगे पर
Scanned with CamScanner

नहीं रह जाएंगे

पत्नी कहती हैं हर जगह
पड़ी डायरियों, पन्नों चुरकुनों
और किताबों में
फेंके रहते हैं कागज
बेड के सिरहाने पैंताने
यहाँ-वहाँ इस कमरे में
उस कमरे में
सरियाते-सरियाते कहीं कोनों में
व्यवस्थित करते
चालीस साल बीत गए।
कवि भी हुए तो छोटे-मोटे स्थानीय
कोई इतने बड़े नहीं हुए
कि मुख्यमंत्री की तरह नाम लोग जान जाएं
मारती हैं ताना
भर गए हैं सारे के सारे कमरे
आप की किताबों और लिखी कविताओं
के पुलिंदों से
मैं सुनता हूँ और चुप हो जाता हूँ
मैं उनसे क्या कहूँ
कि मेरे न रहने पर
कमरे और गद्दे, फूलदान और टी.वी.

Scanned with CamScanner

फ्रिज और जाने कितने सामान
आलमारियों के नोट और सोने के बिस्कुट
फिक्स डिपॉजिट की रसीदें और पासबुक
कपड़े और तुम्हारे गहने
सब रह जाएंगे
पर नहीं रह जाएंगे
इस घर में शब्द
जिनके पास आत्मा होती है।

****

Scanned with CamScanner

पेड़ पर इकट्ठा हैं कौवे

न तो पेड़ को कोई इतराज है
न कौवों को
दोनों दोनों के लिए
कोई खास बोझ नहीं हैं
कौवे यहाँ-वहाँ
पेड़ पर काँव-काँव कर रहे हैं।
घर में बैठे, सोए
चलते, खड़े लोग
घर में हैं
कोई घर को इतराज नहीं है
घर है
वे चले जाएँ कहीं
तो घर को वहीं लौटकर
वैसा ही पायेंगे
कौवे भी जानते हैं
पेड़ वहीं रहेगा
उनके लौट आने पर
वहीं का वहीं
घर पेड़ कौवे
और आदमी
क्या मिलकर बनाते हैं

Scanned with CamScanner

एक दुनिया
जहाँ सब लोग यों ही
पड़े खड़े सोए
उठ-बैठ रहे हैं
दुनिया यह है
और लोग वही हैं
यह क्या कोई कम है
कविता में सोचने के लिए।

****

Scanned with CamScanner

बीतते दिन

वे दिन बीत गए
जिन्हें हम नहीं चाहते थे कि
बीत जाएं
वे भी दिन बीत गए
जिनका बीतना हम चाहते थे
वे भी दिन बीत जा रहे हैं
जिनके बारे में हमारी कोई
तलब या खुशनुमा दिलचस्पी
कुछ भी नहीं है
दिन बीत रहे हैं
और वर्ष-दर-वर्ष
कैलेंडर नए हो रहे हैं
एक दिन ऐसा भी होगा कि
कलैंडर रहेगा वहीं दीवाल पर
न बीतता हुआ
घर जो हमें बराबर देखता था वह स्वयं
बीत जाएगा।

****

Scanned with CamScanner

उसे नहीं पता था

भूजा जब भूजा जा रहा था
वह नहीं जानता था
उसे खाया जाएगा
चना जब अंकुरित हो रहा था
उसे नहीं पता था
उसे परोसा जाएगा
मूली जब मोटी हो रही थी
उसे नहीं पता था
वह सलाद के काम आएगी।
लड़की जब बड़ी हो रही थी
उसे बिल्कुल नहीं पता था
उसका रेप हो जाएगा।

****

Scanned with CamScanner

चैत में कुछ पेड़ों का संदेश

होली बीत गई
चैत आ गया
शहर के खुले इलाके में
जहाँ-जहाँ शिक्षा-संस्थान हैं
वहाँ-वहाँ पेड़ों में पत्तियाँ हरी हो गईं
फूल भी आ गए,
कई पेड़ तो फूलों से लद गए
कचनार
सहजन
सेमल
उधर से गुजरा
तो ध्यान गया
पेड़ बोले, धन्यवाद
आप ने निगाह डाल दी
पर शहर के लोग
ज्यादातर-बड़े आदमी हैं
देखते भी नहीं इधर
जैसे वे झोपड़ पट्टी से
गुजरते हुए
सिर नीचा कर लेते हैं
भई, उनसे कहिए

Scanned with CamScanner

उस तरह की कोई बात नहीं है
हमारा भी उल्लास और आनन्द है
हम उन्हें शरीक करना चाहते हैं
संदेश मुझे पेड़ों का
भद्रजनों तक पहुँचाना है
न सही अच्छी कविता
पर मुझे यह काम
जरूर करना है।

****

Scanned with CamScanner

इन दिनों

इन दिनों मैं आदमियों से नहीं मिलता
मिलता भी हूँ तो काम भर का
ज्यादातर पेड़ों से मिलता हूँ
गली के कुत्तों से
रास्ता काटती बिल्लियों से
दुकानों से, सड़कों से
जिनसे मिलने का कार्यक्रम नहीं होता
टहलना बड़े लोगों का काम है
मैं चलता हूँ कुछ अपरिचित लोगों से
मिलने के लिए।
हवा के हिलने
और-पत्तों के होने को
महसूस करने,
दुनिया का चेहरा नहीं होता जब
उस दुनिया में
एक और-दुनियादार की तरह होने के लिए
मुझे कोई मशक्कत नहीं करनी पड़ती।
मैं सूँघता हूँ दुनिया को अपने हाथ पर
रखकर एक फूल की तरह
और गंध का अनुभव करता हूँ,
उस गंध को भाषा देता हूँ,
आप चाहे उन्हें कविताएँ
कहें न कहें।

****

Scanned with CamScanner

एक रचना चलती नजर आएगी

पानी पी लिए जाने के बाद
गिलास तब तक पड़ा रहता है
जब तक उठाया न जाए
गिलास के पास पैर नहीं होते
आदमी का सब कुछ उठा लिया जाए
तो वह पड़ा नहीं रह जाता
वहाँ से चला जाता है
थोड़ी देर ठगा-सा रहता है
गिलास खाली होकर अपनी बात नहीं कहता
आदमी कहता है, अपने हकलाते शब्दों से
आदमी के पास कुछ नहीं होता तो भी
कुछ उच्छवास होते हैं, कुछ-अस्पष्ट शब्द
आप हमेशा नहीं उम्मीद कर सकते उससे स्पष्ट भाषा की,
पर कुछ होता है, उसके कंधे झुके रहते हैं
उसकी आँखों में कुछ समाया रहता है
उसकी चाल में एक उदास कविता होती है
उसकी पहचान हो जाती है ठगे गए आदमी की तरह।
आदमी हमेशा कुछ कहता नजर आता है
गौर से देखो हर चुपचाप जाते आदमी को
तुम्हें हमेशा एक रचना चलती नजर आएगी।

****

Scanned with CamScanner

याद

हल्की-हल्की बारिश होती
याद तुम्हारी आती
हल्की-हल्की हवा बह रही
याद तुम्हारी आती।
धीरे-धीरे फूल खिल रहे
याद तुम्हारी आती
धीरे-धीरे फूल झर रहे
याद, तुम्हारी आती।
बच्चे सारे बड़े हो रहे
याद तुम्हारी आती
धीरे-धीरे दर्द बढ़ रहा
याद तुम्हारी आती,
धीरे-धीरे नींद आ रही
याद तुम्हारी आती,
सपने में भी तुम आती हो
याद तुम्हारी आती।

****

Scanned with CamScanner

तोता

तोता हरा है
अपने पंख
अपने शरीर के प्रत्येक अंग में
प्राय: बिल्कुल हरा-हरा
सिवाय अपनी चोंच के
जो लाल है।
मुझे हरे रंग के तोते में
कई चीजें बहुत अच्छी लगती हैं
एक तो उसकी फल-तृष्णा
दूसरे उसकी आँखें
और सबसे ज्यादा उसके चोंच
वैसे तो मैं सोचता हूँ कि
आदमी के पास भी एक-चोंच
होनी चाहिए,
भले ही वह पंख न पाए,
उसके भीतर फल खाने की
वैसी इच्छा न हो,
पर चोंच का लाल रूप
कितना जरूरी है,
यह सवाल कविता से
और कविता के पाठकों से
पूछना मेरे लिए लाजिमी है।

****

Scanned with CamScanner

प्रभु-दर्शन

ज्यादातर इस आपाधापी की दुनिया में
किसी को कोई ध्यान से नहीं देखता
पर अचानक आज ऐसा हुआ
कि मैंने एक आदमी को ध्यान से देखा
उसके चेहरे से एक कुर्सी निकली
उस पर ईश्वर बैठ गया।
मैंने कहा, प्रभु आप यहाँ
वे न मुस्कराए न उन्होंने वरदान दिया,
फिर मैंने उसके चरणों की तरफ देखा
उसमें से गंगा निकलीं
मैंने कहा, आप पतित-पावनी हैं
आप तो भगीरथ-प्रयत्न से मिलती हैं
आप कैसे अचानक इस रूप में
इस आदमी के चरणों को
कृष्ण का चरण मानकर
निकल रही हैं,
बहरहाल, मैंने सिर्फ देखा
और लौट आया
मुझे देर तक प्रभुदर्शन का
सुख मिला,
मैं कृतार्थ था

Scanned with CamScanner

पता नहीं वह आदमी इस बात को
जान पाया कि नहीं,
कि मैंने क्या-क्या देखा उसमें।

****

Scanned with CamScanner

चंद शेर

उन्हें एहसास होता है कि कुछ एहसास होता है
हवा ऐसे नहीं रूकती कहीं कुछ खास होता है।
उन्हें अपने सरीखे हुस्न का शानी नहीं दिखता,
मुझे अपने तरह का आज तक आशिक नहीं दिखता।
जमाने ने हमारे दिल पर जितनी चोट कर ली है,
उसे बर्दाश्त करने का कोई भी दिल नहीं दिखता।
बताएँ किस तरह का यह जमाना क्या हआ यारों,
कोई मिसरा नहीं मिलता, कोई जुमला नहीं मिलता।
जमाना बह गया है एक तानाशाह के पीछे
कोई वक्ता नहीं मिलता, कोई श्रोता नहीं मिलता।
चिरागों के तले अब तक अँधेरा सुनते आए हैं
उजालों में अँधेरा है, उन्हें यह भी नहीं दिखता।

****

Scanned with CamScanner

वसंत-एक

तुमने अचानक पकड़ लिया
प्यार से मेरा हाथ
हाथ में कुछ आया न आया हो
पर दिल में जरूर कुछ आया
कि फूल इन्द्रियों के बगीचे में खिल गए।
वसंत कहीं आया हो न आया हो
हमारे भीतर एक वसंत जरूर आया
और हम इस मर्त्य जगत् से
थोड़े परे हो गए, वसंत ने देह के वृक्ष के
पत्ते-पत्ते को हल्के से हिलाया।

****

सभ्यता 'साधू' के ढंग पर
Scanned with CamScanner

वसंत-दो

मैं सोच ही रहा था कि
मेरी पत्नी
आज पीली साड़ी पहनेगी
और इस तरह वसंत को
अपने पास बुलाएगी
पर वह तो मायके गई है
इसकी स्मृति न थी,
तभी मेरा ध्यान गया
मेरी बहू ने पहन ली थी
गोरी देह पर
पीली चटख साड़ी
मैं प्रसन्न हुआ
कि मैंने अगली पीढ़ी के वसंत को
भविष्यत् वसंत के रूप में मनाया।
मेरे न रहने पर भी
लोगों में वसंत-भाव रहेगा
इस विश्वास से मेरा थका शरीर
गुदगुदाया,
मैंने इस बार एक नए रूप में
वसंत मनाया।

****

Scanned with CamScanner

मेरी खराब कविताएँ

एक फूल पर
नजर पड़ जाती है
अंदर कुछ खिल जाता है
एक पत्ती हरी-सी
चित्त को हरा-भरा कर देती है
थोड़ी-सी स्पर्श करती हवा
प्राणों में नए संचार करती है
एक बगीचा कितने काम का होगा,
सोचता हूँ
ज़रा-सा जल
कंठ में आकर
अमृत का रस भर देता है
नदी कितनी बड़ी चीज़ है
सोचता हूँ
जरा-भी जगह में
इत्मीनान से बैठ जाता हूँ
थोड़ी और जगह मिलने पर
आराम से लेट जाता हूँ
दिमाग में आता है
पृथ्वी कितनी बड़ी नियामत है।
काश यह नियामत सबके लिए होती

सभ्यता 'साधू' के ढंग पर
Scanned with CamScanner

कि आदरणीय होता एक अदना-सा किसान
और मजदूर
माननीय होता बड़े-से-बड़े लोगों की तरह,
असल में मैं कविताएँ नहीं लिखता
जरूरी बातें दुनिया की किताब में दर्ज
करना चाहता हूँ
कि ये काम आ जाएँ
हिंसा, अन्याय, युद्ध, पीड़ाओं के विरुद्ध
आत्मा की एकता के तहत
मेरी कविताएँ भले ही पसंद न आएँ,
कलाविदों को।

****

Scanned with CamScanner

रात

न जाने कहाँ से आती है रात
कि हम लौटने लगते हैं
कुछ-कुछ सोने लगते हैं
और अन्ततः सो ही जाते हैं।
रात, यदि जागो तो
बहुत बड़ी लगती है
क्या सबसे कट जाने का नाम है
रात
कि अपने में लौट आने का नाम है
पर रात है बड़ी दिलचस्प
कई बार डरावनी
कि इसमें इतना अकेला होता है आदमी
कि वह सो जाए
यानी कि कुछ समय के लिए
मर जाए,
क्या यह भी एक कारण है
कि संहार की देवी का नाम है
कालरात्रि।

****

Scanned with CamScanner

नश्वरता की भाषा

बहुत पुरानी है कहानी
कि जीवन में सुख नहीं है
कि या तो दुख ही दुख है
कि दुख ज्यादा है
कि यहाँ कुछ नहीं रहेगा
जब तुम नहीं रहोगे
कि सब रहेगा
तुम केवल तुम नहीं रहोगे
कि यह जीवन है क्षण-भंगुर
कि देह नहीं रहेगी
कि कुछ भी साथ नहीं जाएगा
कि रामनाम तुम्हारा असली साथी
कि तुम हो केवल माटी
कि तुम हो जाओगे पंचतत्त्वों में विलीन
पर क्या करूँ मैं
कि यह जो कहते हैं
वे भी यही कहते हैं
आगे भी जो कहेंगे यह कहानी
वे भी इसी नश्वर संसार में रहेंगे।

****

Scanned with CamScanner

उम्र के ढलान पर भी

बूढ़ा होने पर भी तुमको याद किया करता हूँ,
क्या हुआ जो प्यार हृदय में उसे जिया करता हूँ।
तुम फूलों की गंध और मैं अलि परिव्राजक हूँ,
तुम अपार संपदा और मैं दीन-हीन याचक हूँ।
वर्षा जब भी होती, बदली छाती, बूँदें गिरतीं।
पलकों में मैं रखकर, तुमको रूप पिया करता हूँ।
नदियों ने तट तोड़ दिए सागर असीम लहराया
वही हवाएँ तीरों की बौछार धनुर्धर लाया।
मन अगाध गहरा लेकिन वह तोड़ चुका धीरज को
किसने तुमको बंद किया कमरे में पहरा बैठाया।
जब भी भुजा फड़कती करने को अलिंगन मन करता
किन्तु स्वयं के संयम को सम्मान दिया करता हूँ।

****

Scanned with CamScanner

वेलनटाइन डे

मैंने सोचा कि
आज तो गुलाब का
एक फूल भी
खरीदूँगा
तो दस रुपया लग जाएगा
देने के लिए उसे
वेलेनटाइन डे के दिन
सुबह अपने बाड़े में
एक फूल गुलाब का खिला देखा तो
उसे भगवान के लिए नहीं तोड़कर
उसके लिए छोड़ दिया था,
पर जब उसे देने के लिए
निकलने लगा घर से
किसी ने तोड़ लिया था
पहले तो झुँझलाया
फिर वापस समझ में आया
कि किसी दूसरे ने शायद
अपनी प्रेमिका के लिए
उसे चुपके से तोड़ लिया होगा,
प्रेम के लिए
होने वाली उपहार आश्रित-खुशी में

Scanned with CamScanner

मुझे और भी ज्यादा आनन्द आया
मैंने वेलनटाइन डे
इसी भाव में मनाया
अपनी प्रौढ़ प्रेमिका को
केवल फोन कर दिया
कि नए और ज्यादा अच्छे अंदाज में मैंने
शायद गुलाब का बेहतर फूल उसे भिजवाया।

****

सभ्यता 'साधू' के ठेंगे पर
Scanned with CamScanner

बड़े लोगों को आमंत्रण

हम छोटे लोग हैं
छोटी-छोटी जगहों पर रहते
छोटी-छोटी कोठरियों के कोनों
बरामदों में, खटिया-मचिया पर
कहीं भी बैठे या पड़े रहते हैं
छोटे-छोटे काम के बदले पाए
पैसों के सहारे
हम कुछ भी खा-पीकर
कहीं भी सो जाते हैं
जमीन पर अँगोछा-बिछाकर
पेड़ की जड़ में सिर रखकर
या किसी भी घर के कोने में
थोड़ा पैरों को बटोरकर,
हमें मच्छरों की परवाह नहीं
हमारे ईश्वरों ने हमें यही सिखाया है कि
हम उसके भरोसे जब तक चाहें जिएँ
और वे जब न चाहें तो मर जाएँ
हम कुछ भी खा लेते हैं
हाँ, जब से नमक दुनिया में आया
तब से वह हमारे भूख का अहम् हिस्सा है,
आपको दुख है अपनी बड़ी जगह का
तो आप भी हमारे बीच आइए
आप पाएंगे यहीं बहुत आनंद है।

****

Scanned with CamScanner

औरतों की यह भी एक बात-एक

एक
औरतों का वश चले
तो दुनिया को छोड़ते समय
अपनी दुनिया की हर चीज
लेती जाएँ,
सिवाय अपने बेटों, बेटियों, पोतों, पोतियों के
वे सबसे पहले ले जाना चाहेंगी झाड़ू
वहाँ उस लोक में अपना सामान रखने के पहले
उन्हें उसकी सख्त जरूरत पड़ेगी,
फिर साबुन, सर्फ
और पोंछा! फर्श और कपड़े साफ करने के लिए
अपना चूल्हा-चौका
और चौकी बेलन तो खास तौर से
क्योंकि जिंदगी-भर यहाँ रोटियाँ बनाती रहीं
और अब वहाँ उन्हें ईश्वर के लिए
रोटियाँ पकानी पड़ेंगी,
अपनी पोटली, पर्स, जेवर, रुपया-पैसा
सेनुर-टिकुली
पाजेब, नेकलेस, जंजीर
और सब कुछ
वे जहाँ रहती हैं वहाँ कोनों में पड़ा असबाब

सभ्यता 'साध्' के ठेंगे पर
Scanned with CamScanner

दुछत्ती में पड़ी चीजें
ऐसा कुछ नहीं जो वे नहीं ले जाना चाहेंगी,
वे पहले तो बूढ़ी होने के पहले
अपनी जवानी पकड़े रहती हैं
और जब वह छूट जाती है
तो जुबान और उपदेश
जो अपनी बहुओं की ओर उछालती रहती हैं,
वे इन्हें भी यहाँ से ले जाना चाहती हैं।

****

Scanned with CamScanner

औरतों की यह भी एक बात-दो

उन्हें अपने लड़कों पर गुस्सा भले आए
पर वे उनके हर दोष पर पर्दा डालने वाली
भाषा भी वापस मर्त्यलोक से ले जाना चाहती हैं,
औरतों के बारे में मेरा तजुर्बा है कि
उन्हें मैय्यत में जाना हो तो कुछ-न-कुछ
कपड़ा वगैरह बदल कर जाती हैं,
वे औरतें हमारी माँ, बहन, बेटी, बीबी
जरूर हैं
पर वे किसी भी तरह से
सामान्य नहीं हैं,
मैं उन्हें प्रणाम करता हूँ
और माफी माँगने के साथ
थोड़ा छोड़ने, थोड़ा कम इकट्ठा करने
और खाली हाथ
रहने की आदत बनाने की विनम्र
सलाह देता हूँ,
यात्रा में सामान वैसे भी बहुत कष्ट देता है।

****

सभ्यता 'साधू' के ढंग से
Scanned with CamScanner

चीजें

चीजें पड़ी रहती हैं घरों में
पर एक भी चीज नहीं होती
जो बोलती न हो,
और तो और
घर में पड़ा अखबार
कभी-कभी लगता है
पूरा संसार
दरवाजा ऐसे लगता है जैसे
वह घर से भागने का चोर रास्ता हो
नल से पानी गिरना
ऐसा लगता जैसे प्यास टपक रही हो
और नहाना-धोना
दोनों मानो स्पर्धा कर रहे हों,
घर में स्त्री
एक मुकम्मल कहानी
और बच्चे बाल-साहित्य
बूढ़ा, पुराना अस्वस्थ वृक्ष
और बर्तन-भाड़े
गोया उन्हीं के भरोसे हैं
हमारी हसरतों के उत्स,
मैं चीजों को गुलाम न मानकर
जब भी आदमी मानता हूँ
चीजें मेरे सामने
जाने कितने अर्थ खोलती हैं।

****

Scanned with CamScanner

जीवन एक डर है

जीवन एक डर है
मरने का
बीमार होने का
दरिद्र होने का।
जीवन डर है
बूढ़े होने का
अपमानित होने का।
जीवन डर है
बाल-बच्चों के बिगड़ने का
मित्रों, परिजनों के संकट का
जीवन एक डर है
देश के पराधीन होने का।
बाढ़ आने का
भूकम्प आने का
महामारी फैलने का
सुनामी आने का
रक्तचाप बढ़ जाने का
रक्तचाप घट जाने का
जीवन डर है ईश्वर के नाराज होने का
भूख न मिटने का
प्यास न मिटने का

Scanned with CamScanner

नींद न उड़ जाने का
प्यार में धीरज खोने का
मित्रों से विश्वासघात का
दुर्घटना होने का
जीवन एक महा डर है
हमेशा इससे काँपते रहने का।

****

Scanned with CamScanner

विकास

वे और सरकारें
मेरा विकास
जबरदस्ती करना चाहती हैं
और मैं विकसित नहीं
होना चाहता,
मैं एक भारत का नागरिक
पूरे होशोहवास से कहना चहता हूँ कि
मैं विकास नहीं चाहता
और यह मेरी इच्छा
बिना अपराध की मेरी स्वतंत्रता है
पर सब के सब मेरे विकास पर
लगे हैं, तो मैं केवल चीख सकता हूँ
कि नहीं चाहिए मुझे जीने के लिए
महँगी दवाइयाँ
और नहीं चाहिए इतनी सड़कें
जिससे जीवित पेड़ों का
सिर कट जाए,
वनस्पतियाँ, औषधियाँ नष्ट हो जाएँ
और किसान अपनी आत्मा
अपनी जमीन खो दें,
मैं नहीं चाहता कि

सभ्यता 'साधू' के ढंग पर
Scanned with CamScanner

प्रतियोगिता के दबाव में
मैं सुख-शान्ति से वंचित हो जाऊँ
पर वे आते हैं सारे सरकारी
वर्दीधारी अमला-तंत्र के साथ
और मुझे इतना विकसित करना चाहते हैं
कि मैं जल्दी-से-जल्दी फूल की तरह
इतना खिल जाऊँ बड़ा हो जाऊँ कि
मुझे झर जाना पड़े
अपनी आत्मा की सुगंध हवा में छोड़,
मुझे पक्का भरोसा है कि वे हर सुगन्ध के खिलाफ हैं
चाहे भले ही वह आत्मा की ही क्यों न हो।

****

Scanned with CamScanner

मर गई स्त्री

उसका मुँह साँवला पड़ता जा रहा था
और चेतना अशक्त हो रही थी
आवाज क्षीण होती जा रही थी
और शरीर कुछ पीला पड़ रहा था
डाक्टर कह रहा था
वह ठीक हो जाएगी
मेरा मन कह रहा था कि
वह नहीं बचेगी
डाक्टर के पास प्रकृति को नापने के
अनेक संयंत्र हैं
मेरे पास कुछ भी नहीं
डाक्टर की बात गलत हो गई
मेरी बात सही साबित हुई।
असल में डाक्टर को
नहीं पता था कि
मैं उससे प्यार करता था
और प्यार कभी गलत नहीं हो सकता।

****

Scanned with CamScanner

ईश्वर को धन्यवाद

वह एक तरह से जीने का दु:ख है
वह धन की कमी का दु:ख है
वह रिश्तों में खटास का दु:ख है
वह अनन्य प्रेम ने मिलने का अवसाद है
वह पुत्रों के बशवर्त्ती न होने का दु:ख है
वह और जीने की कामना की
संभावना के असफल होने की
आशंका का कष्ट है
वह अत्यधिक गर्मी का
वह अत्यधिक सर्दी का
वह दुनिया में विषमता की अनुभूति की पीड़ा
का मलाल है
वह वसंत में पतझर होते जाने का संकट है
वह, वह, वह वगैरह
अनन्त दु:खों के बीच
जीवन सरिता के किनारे बहता हूँ
समानान्तर
और ईश्वर को देता हूँ धन्यवाद
कि कम से कम दु:ख को भोगने का
अवसर तो दे रहा है।

****

Scanned with CamScanner

कुछ-कुछ गायब हो जाता है साल दर साल

पिछले साल की तुलना में
जैसे ही आता है दुनिया में नया साल
वैसे ही कुछ गायब हो जाता है

पहले गिद्ध गायब हुए
फिर हुईं गायब गौरैया
अब इस साल दीपावली में
कीट-पतंगे गायब हुए

धीरे-धीरे पेड़ गायब हुए
जितने गायब हुए उनसे
बहुत कम लगे

धीरे-धीरे नौकरियाँ गायब हुईं
पहले जितनी थीं उतनी नहीं रहीं
और रहीं भी तो ऐसी
जो हमेशा गायब होने के भय में
चलती हैं,
धीरे-धीरे गरीब नहीं
उनके हौसले गायब होते गए

Scanned with CamScanner

धीरे-धीरे सीधे-सादे देवता
और ईश्वर गायब हुए
धीरे-धीरे सभी अच्छे विचार

अब एक नया नियम है
गायब करो हर कुछ
और बनाओ मॉल से भरा
और एक बड़ा बाजार।

****

Scanned with CamScanner

जीवन-बोध-1

शाम ढले तो कुत्तों की आवाज
धीरे-धीरे रात का आगाज होना
उदास आदमी का धीरे-धीरे चलना
चुपचाप हवा का इतने धीरे चलना
गोया रुक सा जाना
साँसों का आना-जाना
और शहर का ऐसे में
अपने कमरे से बाहर कहीं ऐसे होना
गोया शहर शहर मे होकर भी
शहर से बाहर है।
जिन्दगी की पदचापों को सुनना
और यों ही जीना
किसे अच्छा लगता है
इस तरह का जीवन-बोध
मेरे मित्रों तुम्हीं बताना?

****

सभ्यता 'साधू' के ठेंगे पर
Scanned with CamScanner

जीवन-बोध-2

यहाँ से निकले तो ही मिलेंगे
कहीं मिलेंगे पहाड़
कहीं खेत-खलिहान
गाँव, घर और कुछ बियाबान
यहाँ कमरे में क्या है?
यहाँ से उठे तो दौड़ते मिलेंगे कुत्ते
मिलेंगे लोग भागते, रुकते
अपने-अपने लिए कुछ खोजते
कुछ खरीदते
कुछ अपना बेचते
हँसते, रोते लोग
खेलते बच्चे, गाते नवजवान
बतियाते बूढ़े
और ललचाते लोग
संतुष्ट और असंतुष्ट
कई जन मिलेंगे।
कई तरह के चेहरे, अच्छे-बुरे
कमरे से निकलें तो मिले जीवन
जिसकी प्रतीक्षा है, हर साँस को।

****

Scanned with CamScanner

कवि का संकट

जब भी कुछ अन्दर से छटपटाता है
तो पास पड़े या
जल्दी में खोजकर पाए गए कागज पर
शब्द और शब्द लिखने लगता हूँ
वाक्य होते हैं
और शब्द
उनमें कुछ अर्थ होगा
कोई समझेगा।
शब्द कविता में हैं
और कविता में शब्द
मैं कहाँ हूँ
और दुनिया इसमें कहाँ है
इसे खोजने में
एक पूरी जिन्दगी खत्म कर दी।
में नहीं जानता कि
इसका क्या अंत होगा
इस दुनिया का
जो सभ्यता के आदि से चल रही है
मेरे जैसे लोगों के द्वारा
शब्द और शब्द
हे ईश्वर

Scanned with CamScanner

इन शब्दों को तुमने पैदा किया होगा
या तुम्हारी दुनिया ने
पर बीच में कवि इसमें कैसे फँस गया?
कवि का यह संकट है शायद?

****

Scanned with CamScanner

बानक और बाजार

साधू बनाए हैं बानक
भिखारी तो बनाए ही रहता है
नेता बनाए हैं बानक
छवि के लिए
सभाध्यक्ष बनाकर बानक
सभा में सुशोभित है
मास्टर बनाए हैं बानक
और पत्रकार तो
सदा से बानक पर
भरोसा करता है
मुहल्ले का हलवाई
और पंडित दोनों अपने बानक के लिए
मशहूर हैं
मैं इस शताब्दी के शहर में
कोई आदमी नहीं पा रहा हूँ
खोजकर भी
जो कोई न कोई बानक न बनाए हो
बानक और छवि
इस शताब्दी के दो ऐसे
उत्पाद हैं
जो सबसे ज्यादा कीमत पर
बिकते हैं।

****

सभ्यता 'साधू' के ढंगे प
Scanned with CamScanner

सड़क के भिखारी और भद्र लोग

सड़क के भिखारी
अब वे कुबेर के वहाँ तो
जा नहीं सकते,
इन्द्र के वहाँ भी
लक्ष्मीपति विष्णु के पास भी नहीं,
शिवजी के पास जाएंगे भी तो क्या,
विरादरी का सवाल है, बिलगेट्स, अम्बानी, बिरला, टाटा
की दान की संस्थाओं में
उनका पंजीकरण नहीं है,
कोई भी कार्ड नहीं है उनके पास
न बी.पी.एल.
न आधार,
न पैनकार्ड,
न कोई आइडेंटिटी प्रूफ
इसलिए उन्होंने सड़क को
किसी कोने में बदलकर
एक ठीहा बनाकर
कटोरा लेकर बैठने का
संकल्प ले लिया है,
सैकड़ों लोगों के गुजर जाने के बाद
कोई दयावश
कोई दान से मिलने वाले
स्वर्गादिक लोभवश

Scanned with CamScanner

कोई लज्जावश
कोई दिखाने के लिए
उनके कटोरों में डाल देता है,
कुछ सिक्का
या कई सिक्के
या कोई छोटे मूल्य का कागज का रुपया
वे रटी-रटाई
कृतज्ञता की भाषा बाइबिल के पवित्र वचन की तरह बोलते हैं
लोग आगे बढ़ जाते हैं।
सड़क के भिखारी
कभी नहीं जाते किसी बड़ी कोठी पर
क्योंकि गार्ड भीख नहीं देता
सिर्फ मालिक के पक्ष में
तर्क देने की उसकी नौकरी है,
सड़क के भिखारी
मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारे, तीर्थ
और दूसरे धार्मिक स्थलों के,
भिखारियों की तुलना में ज्यादा आम भिखारी है,
जिन्हें धार्मिक संसदों में
रहने का मौका नहीं है,
सड़क का भिखारी
सड़क से भीख नहीं
गुजरने की भीख भी नहीं
सिर्फ एक किनारे की माँग से
संतुष्ट है,

Scanned with CamScanner

जैसे आम जनता
रोटी, दवाई पाकर संतुष्ट हो जाती है,
पर भिखारी सड़क का
कभी भी नहीं हुआ खुशहाल
बड़े-बड़े प्रतापी राजाओं के शासन से लेकर
आज के लोकतंत्र तक,
क्या भिखारी निराला की कविता से लेकर
आज तक इसी तरह नायकत्व पाएगा,
जिसकी कोई नायिका नहीं होती,
उसके कटोरों में पड़ी
थोड़ी सी लक्ष्मी ही नायिका है,
जिसे वह रोटी के बदले किसी भी
दुकानदार को देने में कोई
अनैनिकता नहीं मानता
भीख और भिखारी
भद्दे शब्द हैं भद्र लोगों के लिए,
पर भद्र लोग क्या है
भिखारी के लिए,
यह,
भिखारियों के अलावा
कोई नहीं जानता।

****

Scanned with CamScanner

पृथ्वी का भाग्य-दुर्भाग्य

पृथ्वी का भाग्य है
कि उसी पर समुद्र है
उसी पर पर्वत
उसी पर जंगल
उसी पर अगणित जीव-जन्तु
उसी पर आदमी
अच्छा और बुरा
पृथ्वी का भाग्य
उसी पर
जन्म लेना है
प्रेम करना है
पृथ्वी का दुर्भाग्य
कि उसी पर सबको मरना है
पंचतत्त्वों में विलीन होना है
अपनी संतानों के
मरने का सबसे अधिक दु:ख
उसी को होना है।
पृथ्वी कभी नहीं मनाती
इसीलिए शायद किसी का जन्मोत्सव।

****

Scanned with CamScanner

अस्पताल

अस्पताल में दो तरह के लोग हैं
एक मरने की प्रतीक्षा में हैं
दूसरे बीमार होने की प्रतीक्षा में
तीमारदार भी प्रतीक्षा में है
किसी के मरने या बीमार होने
या अपनी जगह किसी और को देने की।
डाक्टर, उजले कोट में
गले में आला लटकाए
आता चैम्बर में बैठता
कुछ पर्चियाँ लिखता है
दवा की दुकान या पैथोलॉजी में
भेजने के लिए, तीमारदार को देने के लिए
या एडमिट करने का आदेश लिखता है
अस्पताल जिन्दगी की यात्रा के
स्टेशन का ऐसा प्लेटफार्म है
जहाँ से या तो बीमारी की गाड़ी गुजरती है
या गुजरता है मौत का एम्बुलेन्स।

****

Scanned with CamScanner

शहर में बूढ़े

शहर में बूढ़े
सुबह हो जाए, सड़क पर आते हैं
तो ठीक रहता है
न उन्हें कुछ सोचना है
न बूढ़ों को देखने वालों को।
दोपहर में बूढ़ा पड़ा रहता है
पर शाम को वह जब भी निकलता है
और कहीं भी खड़ा हो जाता है
तो एक सवाल कोई भी दाग देता है
बाबा, क्यों यहाँ खड़े हैं?
तबीयत को ठीक है?
शहर में बूढ़ा
हर शाम को ज्यादा बूढ़ा हो जाता है
क्योंकि सूर्य की तरह
अस्त हो जाना उसके वश में नहीं।
शहर में किसी बूढ़े का
किसी घर में होना
शहर की संस्कृति में
एक छेद है,
जिसके मरने की जरूरत महसूस की जाती है।

****

Scanned with CamScanner

कूड़ेदान में हम

देखो न
कैसे इतिहास ने हमें कूड़े पर
फेंक दिया है
कुछ फर्क नहीं पड़ता किसी को
पर अपनी दुर्दशा पर
हमें तो फर्क पड़ता ही है
जब मैं ऐसा कह रहा हूँ
तो सोचता हूँ
कितने लोग होंगे मेरे साथ
तब कूड़े पर भी हमें
गर्व होता है
फेंके जाने का दु:ख भूल जाता हूँ
वे लोग गलत सोचते हैं।
कि वे कूड़े पर नहीं
फूलों पर फेंके जाएंगे
उन्हें नहीं मालूम
कि वे फूल भी हमारे हैं
वे काँटे बनकर
उन्हें कष्ट देंगे।
इतिहास न्याय करेगा
क्योंकि इतिहास
किसी का नहीं होता हमेशा।

****

Scanned with CamScanner

लिखना एक प्रार्थना है

मुझे जैसा लगता है जीवन
वैसा ही लिखूंगा
तो जीवन के प्रति न्याय होगा
और यदि न लिखूँ
तो अपने प्रति अन्याय होगा
इसलिए कुछ लिखने के पहले
हजार बार सोचना पड़ता है
सोचना पड़ता है
अथाह जीवन के बारे में
सोचना पड़ता है जीवित जीवन के बारे में
दोनों के बीच में
यदि कोई संतुलन बने
तो शायद कविता भी बने।
इसलिए लिखना एक प्रार्थना है
संतुलन पाने के लिए
जीवन के आकाश में
उड़ने के लिए
एक पक्षी के पंखों की तरह
काश, मैं लिख सकता सबके लिए
प्यार
क्योंकि वही है श्रेष्ठ काव्य

Scanned with CamScanner

वैसे भी मृत्यु कविता नहीं है
सिर्फ शोक है
और जीवन के विरुद्ध है।
कविता में कविता की बात करना
कितना कठिन है जीवन की तरह
जीवन में जीवन की बात करना जैसे।

****

Scanned with CamScanner

शहर में

शहर में घर चलाना
बहुत मुश्किल है
किसी से प्यार करने की तरह।
शहर में आबरू से
बने रहना
बहुत मुश्किल है
गठीले बदन वाली
लड़कियों की तरह।
शहर में नौकरी करके
कहीं भी घर बनाना
बहुत मुश्किल है
शहर में किसी की भी मदद कर पाना
बहुत मुश्किल है।

****

Scanned with CamScanner

बची खुची आशा

बची खुची आशा से
आशा बनी रहती है
तेल-पानी खत्म होने पर भी
गाड़ी के कुछ दूर तक
ढुरुक जाने की आशा रहती है
बची खुची देह में
हरियाली आने की आशा रहती है
ढह गए घर के फिर बनने की
आशा रहती है
कठिनतम बीमारी में
ठीक होने की आशा बनी रहती है
आखिरी साँस तक आशा
बची-खुची रहती है
आशा चेतना की भट्ठी की आग है
जो जलती रहती है
और बुझते-बुझते
कोई न कोई चिनगारी
छोड़ जाती है।

****

Scanned with CamScanner

शहर में सेपहर

सांझ आने के कुछ घंटों पहले
सेपहर का वक्त होता है
बड़े-बूढ़ों की छाती में
सूनापन पैदा करती सेपहर
महानगरों में
नवजवानों को सड़क पर
भागने को मजबूर कर देती है
लड़के निकल पड़ते हैं
सड़क पर
लज्जालु लड़कियाँ
बार-बार केश खोलती
यहाँ-वहाँ
देखती
बैठ जाती है बालकनी पर
कुर्सी लगाकर और
गरीब जवान स्त्रियाँ
कहीं भी बोरा बिछाकर
या नंगी फर्श पर।
कुछ चाय-वाय हो जाए
जैसे अचानक
घर कहता है

सभ्यता 'साधू' के हँसने पर
Scanned with CamScanner

और सेपहर का सामना
चाय नमकीन या कि पकौड़ी से
कर लेना चाहता है
महीने में एक बार
तनख्वाह पाने वाले लोग
सेपहर का गंभीर मुकाबला
कुछ इसी तरह करते हैं,
पैसेवाली और बड़े घरों की
औरतें
निकल पड़ती हैं शापिंग के लिए
अथवा ब्यूटी पार्लर।
मर्द अगोरते हैं अपने
कमरों और दुकानों में
दोस्तों के आने का
कुछ लोग यों ही
इधर-उधर
आवारागर्दी करते हैं
और कुछ बहुत मरे हुए लोग
कहानी की किताब पढ़ते हैं
या कुछ लिखते हैं
कई बार ताश खेलते हैं
कई बार यों ही किसी भी के
घर चले जाते हैं
वह कहीं और गया होता है
तो किसी और के घर चले जाते हैं

Scanned with CamScanner

शाम को थककर लौटते हैं
और सेपहर को काट देते हैं।

****

दोपहर के बाद शाम के पहले के अन्तराल को 'सेपहर' कहा जाता है।

Scanned with CamScanner

सत्य

अरे कोई तो मेरी सहायता करे
मुझ अभागे
मुझ बेचैन आत्मा को
कोई तो मुझे बताए
सत्य कहाँ है
और कहाँ से कैसे मिलेगा
कि उसे भर आँख भेटूँगा
जैसे भगत भरत ने भेंटा
भगवान श्रीराम को।
उन्होंने भेंटा था कि नहीं
पर जब सत्य किसी को
मिलता है तो वह अवश्य
बिना भेटे रह नहीं सकता,
कोई तो बताए मुझे सत्य
मुझे क्या करने के लिए पैदा किया गया?
और पैदा किया गया
तो इतनी इन्द्रियाँ क्यों परोस दी गईं
और परोस दी गईं तो
उनमें इतनी अतृप्ति क्यों है
मुझे मन क्यों दिया गया
जो है नहीं पर
भासता है कि वह

Scanned with CamScanner

बिना पैर चलता है,
बिना सवारी के कहीं भी पहुँच जाता है
जहाँ वह शरीर के साथ नहीं पहुँच पाता,
पर एक बार भी वहाँ गया हो सशरीर
या कहीं देखा हो स्वप्न में, सिनेमा में
चित्र में, या मित्रों के वर्णन में सुना हो,
कोई तो बताए कि सत्य कहाँ है, किस वेष में है
किस देश में है कि किस हालत में है
मैं आदमी का बच्चा
उसे जाने कितनी कल्पनाओं में खोज रहा हूँ
और वह नदारत है
क्या हर वह चीज सत्य है
जो नदारत होने की शक्ति रखती है?

****

Scanned with CamScanner

सेल्फी ले लें!

आफत आए
आग लगे
या कोई बच्चा
मोटर के नीचे आ जाए
सेल्फी ले लें।
कोई अबला चीख रही हो
गुंडे उसको तहस-नहस कर
लूट रहे हों,
सेल्फी ले लो।
बच्चे भीख माँगते हों स्टेशन पर
तड़प रहा हो कोई
अपने चरम कष्ट में
कहीं नदी उफनाई हो
या कोई उसमें डूब रहा हो
सेल्फी ले लें।
मुग्ध हुए कि
लगे दिखाने,
कोई अच्छा दृश्य देखकर
अथवा कोई करुण, क्रूर
घटना, दुर्घटना
हाथ लगे तो सेल्फी ले लो

Scanned with CamScanner

अपना उनका यही रोल है,
दुनिया चाहे मरे
या जैसी भी हो
सेल्फी ले लो।

****

Scanned with CamScanner

खेल

इच्छाएँ काँपती हैं
जलती लौ की तरह
आत्मा जलाए रखती है लौ
हवाएँ चारों ओर से
उसे विचलित करती रहती हैं
आत्मा का तेल
अंततः खत्म होने के पहले
एक बार आखिरी कोशिश करता है
और थककर रह जाता है
लौ बुझ जाती है
इच्छाओं का काँपना क्या
स्वयं इच्छाएँ खत्म हो जाती हैं
अनन्त बार ऐसा हुआ है
आगे होगा ही
जैसा कि खेल है
खेल खेलने में जीवन
चला जाता है
और अगला खिलाड़ी
यही खेल खेलता है।

****

Scanned with CamScanner

सुप्रभात

यह प्रभात है
हिलता दिखता पान-पान है?
हवा बह रही मीठी-मीठी
चिड़ियाँ बोल रही है प्यारी
गाती, जैसे सुप्रभात है,
कितने भी दुःख हों जीवन में
सुबह जगे निकले तुम बाहर
उगा नहीं यदि सूरज अपना
श्वास-श्वास का अनुभव लगता है
मानो यह सौगात है।
बच्चे बूढ़े सभी निकलकर
यौवन की आँखों को पाकर
मानो मृत्यु पछाड़ जी रहे
सुबह-सुबह
क्या बात है!

****

Scanned with CamScanner

दरिद्र

दरिद्र लोग कहीं-आते-जाते नहीं
वे मुहल्ले के कुत्तों की तरह
वहीं डोलते हैं
अलसाए पड़े रहते हैं
झगड़ा करते हुए
ईर्ष्या
और द्वेष में
जलते-तपते
बीमारी और भूख से
परेशान होते
वहीं के वहीं खप जाते हैं
दरिद्रों की जमात
हर जगह है
अमीरों से ज्यादा।
दरिद्रों के पक्ष में
लिखी जाती हैं
असंख्य कविताएँ
जिसे वे कभी नहीं पढ़ते हैं।

****

Scanned with CamScanner

मुहल्ले के बूढ़े

मुहल्ले के बूढ़े
बरामदे में उसी तरह अखबार
पढ़ रहे हैं
जैसे पिछले कई वर्षों से
पढ़ते आए हैं,
वे अखबार का कोना-कोना
पढ़ते हैं
क्योंकि पूरी जिन्दगी में
बने रहने का यही एक उनके लिए उपाय है,
हर साल कुछ बूढ़े
मर जाते हैं
और उनके उनकी तेरही से
लौट आने के बाद
बचे हुए बूढ़े
और ज्यादा दिनों तक जीने के लिए
रोज योगा करते हैं
टहलते हैं
गरम पानी पीते हैं,
त्रिफला का सेवन करते हैं
ज्यादा से ज्यादा ब्लडप्रेशर की
जाँच करवाते हैं

Scanned with CamScanner

देखते रहते हैं कि शुगर नार्मल है कि नहीं
बूढ़ों की उत्कट इच्छा
अपनी गृहस्थी में
बने रहने की है
गो वे जानते हैं कि
उसके बावजूद
वे नहीं रहेंगे।
बूढ़े और कुत्ते
सुबह देखने में
दो तरह के दिखते हैं,
बूढ़ा जिन्दगी के लिए तैयार होता दिखता है
और कुत्ते रातभर भौंकने के बाद
यहाँ-वहाँ सोये मिलते हैं।

****

Scanned with CamScanner

तुमसे

बची रहेगी दुनिया
और बचे रहेंगे हम
तो प्यार करेंगे
तुम नहीं भी प्यार करो
तो क्या फर्क पड़ता है
क्या फर्क पड़ता है कि
तुमसे कभी भेंट न हो
या तुम घृणा करो मुझसे
मैं तुम्हें प्यार करूँगा
जब जब वर्षा होगी
बूँदे आएंगी
जब-जब
पत्तियाँ हरी हरी हवा में हिलेंगी
हम तुम्हें प्यार करेंगे,
जब-जब कुछ अच्छा दिखेगा
तुम्हें हिस्सेदार बनाएंगे
जब-जब कुछ अच्छा खाएंगे
तुम्हें दूर से खिलाना चाहेंगे
जब-जब पाँव धरेंगे धरती पर
तुम्हें दर्द में याद करेंगे।
जब-जब हँसेंगे

सभ्यता 'साधू' के ठेंगे पर
Scanned with CamScanner

तुम्हें हिस्सेदार बनाएंगे
तुम समझते हो कि तुमने
प्यार मेरा खो दिया,
असल में यह तुम्हारे बस का नहीं
कि तुम मेरा प्यार खो-दो,
तुम खो सकती हो अपनी आत्मा
पर मेरी आत्मा को खोने की शक्ति तुममें बिल्कुल नहीं है।

****

Scanned with CamScanner

मध्यवर्ग का नरक

एक तो यह जिन्दगी ही नरक है
जिसमें बाजार के सामने
हमें हमेशा खड़े रहना है,
कुछ नहीं खरीद सकते
क्योंकि जेब की सीमा
बहुत कम है और इस बात
का एहसास काफी कुछ नर्क में
इजाफा करता है,
दूसरी एक और नरक की दुनिया है
जब उठने पर मिल जाता है
बरामदे में पड़ा अखबार
समाचार पढ़ना एक लक्ष्य है
तीसरा नरक हमारे समय का
सबसे बड़ा राजनीति का संसार है
कभी एक ओर से और कभी हमारी ओर से
बैटिंग बालिंग करना और देखना पड़ता है
तीसरा या चौथा नरक दवाएं हैं, रोग है
डाक्टरों की फीस और दवाइयों का दाम है
जो अपने आप में एक महान नरक है।
पाँचवाँ नरक पहचान है, आधार कार्ड,
पहिचान पत्र, ड्राइविंग, लाइसेंस,

Scanned with CamScanner

पैनकार्ड, स्मार्ट कार्ड, जीवन बीमा की
किश्त
और बच्चों की चिन्ता,
बेटी के व्याह करने या विदा करने पर भी
उसके सुख-दु:ख की चिन्ता
बेटों के भविष्य की चिन्ता
घातक बीमारियों की चिन्ता
और अन्ततः बूढ़े हो जाने का
अनुभव
सब नरक ही तो है
स्वर्ग शायद-हमारे पुरखों की
कल्पना है।

****

Scanned with CamScanner

आगे भी मौन रहूँगा

हम किसी न किसी को खोजते हैं
यह क्या रहस्य है,
कोई भी आ जाता परिचित-अपरिचित
कुछ उससे बात करते
उसका सुख-दुख सुनते
अपना कहते
ऐसा मन में सोचते
हम रहते-जीते।
इसका क्या रहस्य है,
इन प्रश्नों का उत्तर देने वाली किताबें
बहुत हैं
किताबों में कोई इस प्रश्न का
संतोषजनक उत्तर नहीं मिलता,
बहुत से लोग कहते हैं
कि सुख-दुख साझा करने से
शांति मिलती है
इसका भी क्या कारण है
कोई तो माकूल उत्तर नहीं है
मुझे लगता है कि
भाषा एक मीटर है
जो बिना बोले चलती रहती है

सभ्यता 'साधू' के ढंग पर
Scanned with CamScanner

वह व्यस्त होना चाहती है
कहीं भी, कभी भी
मनुष्य न मिले तो पत्थरों से
पेड़ों से, सड़कों से
बच्चों से, जीवों से
वनस्पतियों से
यहाँ तक कि किसी भी ऐसे से
जो स्वयं से इतर है
यह एक अजीब बेचैनी है
जो भीतर से समुद्र में हाहाकार करती रहती है,
कभी इसमें से निकलते हैं रस
कभी विष और घोंघे सियार
क्या यह संसार-सागर है
और प्रत्येक इस सागर की इकाई
यह कथन भी शायद काम चलाऊ है
मैं किसी उत्तर की अभीप्सा में
पहले भी मौन था, आगे भी मौन ही रहूँगा।

****

Scanned with CamScanner

निर्विकल्प

इससे पहले कि
यह दुनिया खत्म हो जाए
मैं खींचना चाहता हूँ
भाषा में अपनी सांस भरना चाहता हूँ
कि वह भाषा
वायु में मिल जाए
और पूरे पृथ्वी-मण्डल में भर जाए
कि यह भाषा
दुनिया के भीतर की आत्मा
खत्म न होने दे,
गो, हर जीव के जन्म के साथ
मरण तय है
पर जैसे पुरखे मरने के पहले
हमारे भीतर एक आत्मा छोड़ गए थे
भाषा के द्वारा
वेसे ही अपनी चीख से
मरने के पहले
दुनिया के वर्तमान
और भविष्य में उस भाषा को
छोड़ जाना चाहता हूँ
मैं उसे जिन्दा रखने के लिए

Scanned with CamScanner

जोर-जोर से चीख रहा हूँ
ऐसी चीख, जिसमें कोई
हिंसा या ध्वनि-प्रदूषण नहीं है
आप विश्वास करें
मैं कविता नहीं लिख रहा हूँ
सिर्फ अपने रक्त की आखिरी ताकत से
आत्मा को नष्ट करने वाली शक्तियों से
लड़ रहा हूँ
लड़ना ओर कविता में भी होना
एक विचित्र विरोधाभास है
पर क्या करूँ
एक कवि होने के नाते
और कोई विकल्प मेरे पास नहीं है।

****

Scanned with CamScanner

घरों में आदमी

सामानों के बीच
आदमी अपनी जगह
बना रहा है
और सामान धीरे-धीरे
घरों को अपना घर मानने लगे हैं,
आदमी एक सामान की तरह
उन्हीं के बीच अपनी जगह
बनाने की कोशिश में
मानो अपने होने को
सामानों में बदल देने का
साक्षी बन गया हो,
सामान, सामान, सामान
घरों को इतना
आच्छादित कर चुके हैं कि
जिन्दा आदमी अपने को
इन्हीं सामानों के बीच
सिर्फ यह जाँचता है कि
कहीं उसकी जगह भर न जाए!
हम सामानों का विरोध करके क्या करेंगे
एक दिन ये सामान हमें भी
सामान की तरह बना देंगे
हम सिर्फ कहीं 'एडजेस्ट' कर दिए जाएंगे,
घरों में।

****

Scanned with CamScanner

आदमी और जानवर

शहर के चौराहों पर
जाहिर है कि सभी जगह नहीं
कुछ चौराहों पर
बिकने के लिए आ जाते हैं
आदमी, दिनभर के लिए
जिन्हें तीन सौ, पाँच सौ
ज्यादा से ज्यादा दाम मिलता है
पर कुछ नहीं भी बिक पाते
जैसे कुछ क्रिकेट के खिलाड़ी
किसी भी कीमत पर नहीं बिक पाते
और मजदूरों की तरह वे भी
लौट आते हैं
अन्तर यही है कि
न बिक पाने पर
क्रिकेट के खिलाड़ी सिर्फ अपमानित महसूस करते हैं
और मजदूर बहुत मायूस हो जाता है
क्योंकि उसके सामने रोटी, दवाई की
भी समस्या है।
इस बात का अनुभव करते हुए
लौट रहा हूँ शहर के एक चौराहे से
देखता हूँ कि एक कबूतर दाना चुग रहा है

Scanned with CamScanner

अपनी कबूतरी के साथ
वह नहीं बिकता,
एक पेड़ खड़ा है वह भी नहीं अब तक बिका
यहाँ तक कि चींटी और गिलहरी भी
नहीं बिकने को तैयार।
आदमी और जानवर में
एक अन्तर यह भी है कि
आदमी खुद बिकता है
जानवर, खुद कभी नहीं बिकता।

****

Scanned with CamScanner

बूढ़ों से

बच्चों को देखो
चिप्स, कुरकरों की माँग करते
वाटरपार्क घुमाने की जिद में
रंग-बिरंगे पोशाकों में
'सन डे' का आगाज करते।
बच्चों को देखो
स्कूल जाते स्कर्ट, कमीज, जूता-मोजा
पहने
अपने या अपने मम्मी-पापा से
बाल झरवा कर
गदबदे बच्चे
स्कूल बैग लिए
बस की प्रतीक्षा करते
बच्चों को देखो,
मेरी उम्र के बूढ़ों
अपने पेट के खराब रहने
गठिया होने
बाईपास की चर्चा करते बूढ़ों,
तुम्हें बच्चों को रोज देखना
चाहिए
और अमर हो जाना चाहिए।

****

Scanned with CamScanner

नई सदी में

चुप्पियों में झर गए दिन प्रेम के
शब्द से अब कट रहे हैं
बिना गहरे प्रेम के दिन।
शब्द सबको चाहिए मीठा
शब्द सबको चाहिए
केवल प्रशंसा के
शब्द सबको चाहिए
जो सत्य से हों दूर
इसलिए अब जिन्दगी जो भी बची है
वह कटेगी झूठ से।
झूठ बोले तो यही दुनिया कभी जो
काट खाने के लिए भी दौड़ती
वह प्यार करती है,
झूठ पर यह जिन्दगी
झूठ पर सरकार चलती है,
जीतता तो झूठ है हरदम
इसलिए यहाँ दिया जाता एक नारा
सत्य केवल जीतता है
जीतता है, स्वार्थ केवल
इसलिए परमार्थ के नारे बहुत हैं
जीतता है पाप केवल

Scanned with CamScanner

इसलिए ही पुण्य है
दावे अधिक हैं
नरक जीतता है जगत में
स्वर्ग की चर्चा बहुत है
कभी हम भी थे
किसी भगवान का आश्रय ग्रहण कर
आज भक्तों के भरोसे हैं
क्योंकि वे भगवान् से भी
बहुत आगे जगत का
अभिनव नियंत्रण कर रहे हैं
आदमी की जिन्दगी में एक साजिश की तरह
प्यार आता है
मगर वह सफल होता ही नहीं।

****

Scanned with CamScanner

सावधान बच्चों!

सावधान बच्चों!
पहने रहो अपनी आँखें
कहीं वे गिर न जाएँ
नाक
कि वह बह न जाए
सिर
कि वह धड़ से अलग
न हो जाए
पहने रहो अपने हाथ-पाँव,
विभिन्न अंग
कि कहीं वे अलग न हो जाएँ,
असल में दुनिया का मन
मैंने बड़ी उम्र में जाना कि
वह
अलग करने में बहुत रुचि रखती है
जोड़ने से ज्यादा,
मेरे भविष्य मेरे बच्चों
तुम्हें सावधान करना मेरा कर्तव्य है।

****

Scanned with CamScanner

डर

जीने में मरने का डर
बीमारी का डर
बाल-बच्चों के बारे में
दोस्तों, प्रियजनों के बारे में
दुनिया के बारे में
सब अनिष्ट संभावनाओं के डर से
जब-जब व्याकुल हुआ
तो भागा
जिन्दगी की गलियों में
खेलते-कूदते बच्चे मिले
जवान चमकदार हंसी वाली औरतें दिखीं,
दिखे बूढ़े बीड़ी पीते,
खैनी खाते,
मिले नवजवान सिनेमा का गाना गाते
मिली अल्हड़ लड़कियाँ
जो सौन्दर्य और यौवन को
चरम प्रतिपाद्य मानती है,
मेरा डर कुछ कम हुआ
जिन्दगी का जल थोड़ा छलका
थोड़े हरे-भरे लगे रास्ते के पेड़,
थोड़ी ज्यादा उत्सुक-प्रसन्न लगी

Scanned with CamScanner

चिड़िया।
कुछ ज्यादा ही भले लगे
आवारा कुत्ते,
लौट आया घर
पोता पूछता है, बाबा!
रात को फिर नहीं न आएगा
भूकम्प?

****

Scanned with CamScanner

मूर्ख है वह

वह जो अपने पत्ते
नहीं खोल रहा है
वह बुद्धिमान नहीं
मूर्ख है
जिसने छिपाकर
रखा है अपना निगूढ़ धन
वह भी मूर्ख है,
वह जो बन रहा है
बुद्धिमान
वह भी मूर्ख है
और जो होड़ में है
वह महानतम मूर्ख है,
उसे नहीं पता कि
पत्ता न खोलना
अपनी आत्मा के लिए
खत्ता खोदना है
और छिपाना
हमेशा के लिए गुप्त रोग पा जाना है,
बुद्धिमान होना
और दिखाना
दुनिया की परम मूर्खताओं में है

Scanned with CamScanner

और होड़ में होना
मौत के मोड़ पर आना है,
आगाह करते रहे
दुनिया भर के आप्तजन
पर आदमी
अब भी इनसे बाज नहीं आ रहा है।

****

Scanned with CamScanner

प्रार्थना का प्रश्न नहीं

प्रभु तुम तो हो
सदा वर्तमान
मैं तुम्हारे साथ
सदा से वर्तमान
निवर्तमान तुम कभी नहीं हुए
मैं भी नहीं होऊँगा कभी
तुम्हें देख रहा हूँ
हवा में, साँस में
फूल में, फल में
वृक्ष में, नदी में
वगैरह-वगैरह में
बस, देख रहा हूँ।
प्रार्थना का प्रश्न ही क्या है?

****

Scanned with CamScanner

छन्द-विचार

जिन्होंने स्तोत्र बनाए
उनकी वे प्रार्थनाएँ थीं,
वे हमारी कैसे होंगी
हमारे भीतर से उपजेगी यदि प्रार्थना
तो वह स्तोत्र बन जाएगी।
कहीं कोई छन्द नहीं होता
प्रतिमाओं की इकाइयों की आत्मा से
एक छन्द निकलता है
उसका पाठ कई लोग करते हैं
जब तक
तब तक कोई और इकाई
एक नया छन्द अपने भीतर से
उपजाती है
वह रचना कहलाती है
और उसका छन्द
पहले के छन्दों से
पृथक होता है।

****

सभ्यता 'साधू' के ठेंगे पर
Scanned with CamScanner

वक्त

वक्त दरिया है डूब जाना है
वक्त की नाव पर जाना है
वक्त अच्छा है बुरा भी है
कभी इसको कभी उसको आजमाना है
वक्त के साँस में समाना है?
कभी जीना कभी मर जाना है
वक्त हर वक्त साथ क्यों देगा
वक्त को भी तो कहीं जाना है।
वक्त के रुख को पहचान करके ही
वक्त से वक्त को विताना है
वक्त आता है तो फिर आता है
वक्त जाता है चला जाता है।
वक्त की बात सबके साथ यही
कभी आता है कभी जाता है।

****

Scanned with CamScanner

छोटी सी इबारत

फूलों को देखा
मुस्कराया
वृक्षों को देखा
चुप हुआ
मुर्गियों को छोटी ट्रक में
जाते देखा
दुःखी हुआ
धनियों को देखा धनी हुआ
गरीबों को देख गरीब
नाले की बदबू को
महसूस कर
खिन्न हुआ
किसी पास से गुजरती स्त्री के
इत्र की गंध पर आनन्दित
यों, जीवन को देखा
सुखी दुःखी हुआ
लौट आया घर
सड़कें पार कर
घर में कमरे में
पहले से इंतजार करते सोफे पर बैठ गया
यों एक दिन बीत गया

Scanned with CamScanner

रात बीत जाएगी
दिनों से दिन
रातों से रातें
महीनों से महीने
वर्षों से वर्ष बीत जाएंगे
मनुष्य होने के नाते एक छोटी सी इबारत
मैं भी लिख जाऊँगा।

****

Scanned with CamScanner

चाँद और तुम

चाँद के पास कुछ नहीं है
सिवाय इसके कि वह चमकता है
और आसमान में है,
तुम्हारे पास सबकुछ है
तुम धरती पर हो
और-केवल चमकती नहीं।
चमकने और अच्छे लगने के साथ
तुम्हारे पास हाथ-पाँव
एक सुन्दर देह
और आँखें
और इससे ज्यादा
एक भाषा है
जो दूसरे की भाषा में
अनूदित हो सकती है।
भले ही तुम अद्वितीय नहीं
पर यह तुम्हारी
द्वितीयता तुम्हें
इस लायक बनाती है कि
तुमसे चाहे तो कोई प्रेम करे
और तुम्हें मन के आसमान में
आजीवन चमकने दे।

****

Scanned with CamScanner

माँ को फोन लगाओ

बेटा-बेटियों
मित्रों, अनुजों, शिष्यों
परिचितों को फोन कर लेने पर
जब-जब कोई शांति नहीं मिलती दिखती
तो मन में आता है कि माँ को फोन मिलाओ,
यह जानते हुए भी कि माँ को मरे अरसा हो गया
और उसे तो फोन का कुछ पता तक नहीं था,
उस जमाने में किसी रसूख वाले के वहाँ ही
फोन होता था
और वह मेरे वहाँ भी उसके मरने के बाद ही,
लग पाया था,
इतने वर्षों बाद
हर दोपहर के ढल जाने के बाद
अक्सर, पता नहीं क्यों मन में
एक विचित्र इच्छा होती है कि
माँ को फोन लगाओ,
यह इच्छा ठीक उसी तरह की है कि
जब मैं छोटा था
तो चाँद को गोली मारने की इच्छा होती थी,
मेरे घर में एक बन्दूक थी
गो मैंने उसे कभी नहीं चलाया

Scanned with CamScanner

छूने के अलावा।
माँ को फोन लगाओ
माँ को फोन कर लेने में
क्या हर्ज है,
कि हो शायद मेरे हर दुःख का उसके पास इलाज
कि जबतक वह जिन्दा थी
केवल वही इलाज थी,
डाक्टर की दवाएँ तो
बस नाम की इलाज थीं।
मन बार-बार कहता है कि
लुप्त माँ, कहीं चली गई माँ
या तारों में समा गई माँ
या ईश्वर के घर में ढकिया-मौनी बिनती माँ
या ईश्वर को भी गुड़-भूजा खिलाती माँ
या उन्हें भी सहारा देती माँ
हो सकता है हो,
मेरे मन
तुम बिना नम्बर का फोन लगाओ,
शायद विपत्ति से निजात पाओ।

****

Scanned with CamScanner

गाँव से आए दिल्ली

गाँव से आए दिल्ली
गोरखपुर के पाड़े जी
लगे चिहा-चिहा के देखने
भागती सवारियों को गाड़ियों में
खाए अघाए लोगों की
थिरकती चाल को निहारने लगे
कहाँ से पाए होंगे इतना धन
कि इतना खर्च करते लोग रोज
इतनी अच्छी सड़कें
इतने अच्छे-अच्छे घर
इतनी सुन्दर-सुन्दर स्वस्थ स्त्रियाँ
और इतनी उन्मुक्त लड़कियाँ
लगे विचारने
पेड़ भी करीने से सजे खड़े
कबूतर भी अड्डों पर भरपूर दाना खाते
भिखारी भी अच्छी भाषा बोलते
और चाय वाले भी इतने चुस्त-दुरुस्त
चकित है पाड़े जी
जाएंगे पहले गोरखपुर
फिर अपने गाँव
बताएंगे मेट्रो की शान

Scanned with CamScanner

जो देख चुके यहाँ
वहाँ जितना रह जाएगा याद।
अब इस सीधी-सादी बात में
कोई विचार नहीं रख सकता
ऐसे सुलेख, सुदर्शन दिल्ली
और गाँव के आदमी के भोलेपन के बीच
नहीं तो कविता बिगड़ जाएगी
और विचारों के होने न होने
बनने, बिगड़ने का कोई मतलब नहीं होता।

****

Scanned with CamScanner

इस साल वसंत पंचमी के दिन

इस साल एक ऐसा भी वसंत आया
जब न तुमने अबीर लगाया
न मैंने इसे मनाया
महादेव अपने सिर पर
केसर के लिए तरसे
मैं तुमसे मिल भी नहीं पाया
न तुमने पीली साड़ी पहनी
न मैंने तिलक लगाया
न तुमने ढोल बजाया
न मैंने गणपति को फगुआ सुनाया
न ही मिली गुलाब की पंखरियाँ?
जिन्हें न मैंने तकिए पर छितराया
न तुमने केश लहराए
न तुम्हारी पीठ खुली
न मैंने उस पर चुम्बन चिपकाया
बजती रहीं पुराने घर की पुरानी किवाड़ें?
कोई भी मधुर झोंका कहीं से नहीं आया
याद में हर सुनहरी का श्री अंग लहराया
ध्यान को आनन्द आया ही था कि
किसी मित्र के मरने की खबर
मोबाइल पर घनघनाया,

Scanned with CamScanner

देह, मन, प्राण में जो कुछ उगा था,
सहसा सूख गया
वसंत ने इस बार
मुझे बैरन ही लौटाया।

****

Scanned with CamScanner

बूढ़े

खाना बनने में कितनी देर है
पूछता है घर का सबसे
बुजुर्ग आदमी
वह खा कर सो जाना चाहता है तुरन्त
उसे कहीं कल जाना नहीं है
पर आज उसे सोने की
जल्दी, खाने की जल्दी है।
बूढ़े अपने थोड़े से कामों के लिए बेहद
सतर्क रहते हैं
उनकी मच्छरदानी समय से
लग जानी चाहिए
और उन्हें अपने डंडे की बेहद
परवाह रहती है
कि वह वहीं उसी कोने में
ठढ़ियाया गया है कि नहीं।
उनकी सुरती की डिबिया
और उनकी लुंगी
वहीं वहीं रहनी चाहिए
जहाँ वे पहले के दिनों में रहती थीं
और यह कि
कोई भी आए तो उसके बारे में

Scanned with CamScanner

उन्हें भी जानकरी दी जानी चाहिए
बूढ़े खेल नहीं सकते कोई भी खेल
इसलिए वे नहीं चाहते कि
उनके साथ कोई खेल करे
बूढ़े या तो पड़े रहते हैं
या खड़े हो जाते हैं कहीं
गो उन्हें कोई
विशेष जिज्ञासा नहीं होती
पर वे रहना चाहते हैं
जानना चाहते हैं
और शरीक होना चाहते हैं।
बच्चे और जवान
उनसे बचना चाहते हैं
पर वे किसी से बचना नहीं चाहते
और बचे रहना चाहते हैं।

****

सभ्यता 'साधू' के ठेंगे पर
Scanned with CamScanner

एक चुनौती, सभ्यता के इस दौर में

गौर से देखो
हर मिलने और बात करने वाले आदमी को
वह हमसे कुछ कह रहा है
गो वह चुप भी होगा तब भी
तुम सुन रहे हो,
पर देखोगे गर और गोर से
तो वह कहीं टंगा है
और तुम भी तो टंगे हो
दोनों की खूटियाँ
स्पष्ट नहीं है
जैसे कपड़ों की खूंटियाँ होती है।
कोई टंगा है कर्ज के बोझ की खूंटी में
कोई बच्चे के सेटिलमेंट की चिन्ता की खूंटी में
कोई अपने प्रमोशन की खूंटी में
कोई पड़ोसी की चक-चक की खूंटी में
कोई अपनी या अपने जन की
लाइलाज बीमारी की खूंटी में
वगैरह वगैरह
गोया खूटियों की कोई कमी नहीं है
और हर आदमी टंगा होकर
तुमसे बात कर रहा है, मिल रहा है।
सभ्यता के इस दौर में

Scanned with CamScanner

निखालिस आदमी से मिलना और
अनटंगे अनलटके आदमी से
प्यार करना बेहद मुश्किल है
सभ्यता में सभ्य बने रहना
आज के दौर की सबसे बड़ी चुनौती है।

****

Scanned with CamScanner

अपनी समझ में

अपनी समझ में तो
हम कोशिश करते रहे हैं
कि हम जिएँ
क्योंकि जीने में ही
अुनभव है
जो बताता है कि
हम या तो खुश हैं
या दुःखी है,
होना अनुभव है
और न होना
अनुभव का न रह जाना है,
क्या 'भव' में 'अनु' उपसर्ग
'भव' को सार्थक करने के लिए है?

****

Scanned with CamScanner

होली-2017

जय हो वसंत
तुम अनन्त को भी
उन्मत कर रहे हो,
तभी तो भोर में
चिड़ियों के शोर में
मुझे होली के ढोलकों पर
पड़ी थाप
और अँगुलियों के लहराने से
उपजे स्वरों की
अनुभूति हुई
और इतने पारिवारिक कष्टों के बावजूद
एक स्त्री देह की जवान जंघाएँ,
इस बुढ़ौती में याद आई,
महादेव से मैंने कहा
प्रभु, अब तो बंद कर दो खेल
अपने इस भक्त के साथ,
वे मुस्कराए
और माता भवानी से
मेरी बात छिपाकर भी
जैसे वह कुछ कह गए,
वे हँसे

Scanned with CamScanner

और अपने दोनों बच्चों
कार्तिकेय और गणेश को
पुकारने लगें
जो कैलाश पर
गणों और भूत-प्रेतों
यहाँ तक कि नन्दी जी के सिर पर
रंग और गुलाल डालते हुए
हुड़दंग कर रहे थे,
क्या करूँ,
हे हवाओं
तुम लोगों ने
चारो तरफ से
मेरी इन्द्रियों को घेर रखा है
वहाँ हलचलें पैदा कर रही हो,
मुझे चिढ़ा रही हो,
वक्त की नजाकत
गो, मैं बूढ़ा हो गया हूँ
पर इतनी तो होली मैं भी
सुना सकता हूँ
कि 'सदा अनंद रहै यह द्वारे
जीएँ सो खेले फाग हो'

****

Scanned with CamScanner

शाश्वत

अकथ है
अव्याख्येय
फिर भी कथनीय
व्याख्येय
जीवन की सुबह से लेकर
संझा तक का जीवित समय
एक दिन की यात्रा की तरह
एक दिन की विश्रांति की तरह
कहाँ से आया
और कहाँ विलीन होगा
कोई नहीं जानता,
और यदि कोई जानता हो
तो मैं नहीं जानता।
इसलिए प्यार करता हूँ
जीवन को
देह में रहते,
देह में रहते
देह से बाहर होने पर
जो बचेंगे वे करेंगे प्यार,
देह और दुनिया
रहेगी मुस्तकिल
ईश्वर की तरह।

****

Scanned with CamScanner

कबाड़ी

सुबह घूमकर
इकट्ठा करता हूँ
लोगों का सुख-दु:ख
झरते पत्ते
खिलते फूल
फैली रोशनी
भागते लोग
लालच, तृष्णा, खांसी
और बुखार
प्यार और प्रतीक्षा करते लोगों को
झोले में डाल लेता हूँ।
दोपहर निकलता हूँ
चुन्नी-मुन्नी
और कुत्तों की ऊँघती दुनिया
गदहों का वैराग्य
और रिक्सों, मोटर साइकिलों
टेम्पुओं, कारों का
जमघट
कचहरी के वकीलों की पेंचदार भाषा
और गवाही में पकड़े गए
लोगों के 'केस'

Scanned with CamScanner

सब उठाता हूँ, ले आता हूँ
झोले में डालकर।
जाने कितने प्राणियों की वेदना
और कितने ही लोगों का सुख
लेकर झोले में डाल लेता हूँ
कविता का झोला भर जाता है
एक संग्रह तैयार है समीक्षकों के लिए
मेरी इच्छा से नहीं, आने वाले संग्रहकर्ताओं के लिए,
मैं कवि नहीं, एक तरह का कबाड़ी हूँ
जो जीवन भर इकट्ठा करेगा
सुख-दुःख का कबाड़
और बेचेगा कभी नहीं इसे
अपनी इच्छा से।

****

Scanned with CamScanner

कविता से भी तूफान उठाने की इच्छा

एक तूफान सा उठता है
भला तूफान कविता में
कैसे बदल सकता है।
लोगों के हौसले
शायद बदल सकते हों
कविता में
एक बना-बनाया
मुहावरा दुहराता हूँ
और पेड़ के तने से
सटकर खड़ा हो जाता हूँ
लोग कितने दु:ख में हैं
दु:खों को दूर करने के उनके प्रयत्न भी
कम नहीं हैं
पर
दु:ख इतना है कि
कि कुछ खण्ड-खण्ड होकर भी
अखण्ड कटता नहीं
आदमी मरता नहीं
सिर्फ मरता नहीं
अपनी अधूरी इच्छा छोड़ जाता है
और यह दुनिया चलती रहती है
कवित के रास्ते
कोई तूफान लाने का
हौसला खत्म नहीं होता।

****

Scanned with CamScanner

मरे हुए मित्रों की स्मृति के बाद

अचानक सुबह नाश्ता कर लेने के बाद
थोड़ी गरमी से राहत के कारण
बूँदा-बांदी के बीच
सोफे पर बैठा, नाश्ता करके, तो
कुछ ऐसे मित्र याद आए
जिनके मोबाइल नम्बरों पर पहले बात होती थी,
अब नहीं रहे,
बहुत दिन पहले जो मर गए थे
और जिनके मोबाइल नम्बर नहीं थे,
उनकी याद के बजाए
हाथ का मोबाइल
दिमाग की तरह उनके नम्बर मिलाना चाहता है,
खेल है जीवन का
रात में आंधी के बाद
जैसे नए-नए विच्छिन्न वृक्षों
और डालियों, पत्तों का
सड़क पर पड़ा रहना
ठिकाने लगाने के इंतजार में,
गुजरते हुए मन को कचोटता है
वैसे कुछ ही वर्षों में मरे मित्रों का
चेहरा

Scanned with CamScanner

मोबाइल के द्वारा याद आता है।
एक दिन हम भी याद किए जाएंगे
बचे हुए मित्रों द्वारा
इस बोध में पड़े हुए परेशान
अंत में मैंने एक जीवित मित्र को
फोन लगाया।
उधर से आवाज आई
कैसे हो, क्या कर रहे हो
जान में जान आई
और जिन्दगी फिर मसाला-जर्दा
खाने की तलब में पड़ गई,
अचानक ज्ञान उपजा-
जिन्दगी! तुम्हीं हो सतत्
मृत्यु तो कुछ है नहीं
वह भी इसी जीवन के भीतर
घटित होती है
और कई जन्मों में बदल जाती है।

****

Scanned with CamScanner

विडम्बना

लड़की खोजने लगी है
आदमी आत्मा की भाषा को
समझने में समर्थ एक पुरुष
और इस खोज में कई पुरुष उससे
मिलते गए,
जिनमें उसे अपनी आत्मा नहीं मिली।
लड़की इतनी बड़ी हो गई
कि लगभग शारीरिक रूप से हो गई प्रौढ़
अब वह चिड़ियों से, रंगों से
घरों की बनावट से, नदियों की लहरों से
समुद्र की नीलिमा और उसके व्यापक हाहाकार से
प्यार करती है,
पता नहीं कब मिलेगी उसकी आत्मा
किसी पुरुष में,
उसे ईश्वर का पता देने वाली।

****

Scanned with CamScanner

रामबाण दवा

घर से निकलो
निकलोगे तो लगेगा पैसा
पाँवों से चलना पड़ेगा
या सवारी करने पर खर्च होगा पैसा,
पैसा जो कमाने से नहीं मिलता
कमीना होने से मिलता है।
इसलिए उसके खर्च की चिन्ता में
घर से मत निकलो,
मिलेंगे लोग, मौन तो रहने नहीं देंगे
खर्च हो जाएंगे गहरे में छिपाए शब्द
उन्हें क्या, उनका तो अपना कोई शब्द भी नहीं है
वे यहाँ से, वहाँ से, दाएं से, बाएं से
लाए हैं पैसों की तरह शब्द,
चुराकर या उठाकर?
अखबार और किताब से
नेता के भाषण से, चालू मुहावरों से
भरे हुए हैं अपनी-अपनी पैंटों की पाकेट
और कुर्त्ते कमीजों की जेब,
उड़ाते रहेंगे वे शब्द
जैसे वे उड़ाए हैं पैसे
और तुम्हारी चुप्पी को गोली से उड़ा देंगे,

Scanned with CamScanner

निकलो नहीं बाहर
बाजार की नजर लग सकती है,
शोर का समुद्र तुम्हें
कहाँ डुबा देगा
या प्राण ही ले लेगा,
क्या पता!
पेड़ों, पर्वतों और टीलों की तरह
पड़े रहो,
इसी में कल्याण है,
भवसागर के भव-रोग की
दवा रामबाण है।

****

सभ्यता 'साधू' के लेे

Scanned with CamScanner

मौन में ही उत्तर

सब कुछ के बाद भी
एक सन्नाटा जाने कहाँ से
आकर ललाट पर चन्दन सा
लग जाता है,
आँखें महसूस करती हैं
दिल कहीं गहरे में डूब जाता है।
जिन्दगी अन्ततः अपने ही कारणों से नहीं
औरों के कारणों से निराश करती है
क्योंकि अपना तो सब कुछ है
पर सबका भला कहाँ होता है?
पेड़ों की तरह भाषा नहीं होती तो
चुपचाप खड़े रहते
हम तो डोल जाते हैं अपने पाँवों से लेकर
आत्मा तक
दुनिया यह कब और बेहतर होगी
हिंसा से मुक्त अहिंसा और कविता में,
प्रश्न है
पर शायद मौन ही है उत्तर।

****

Scanned with CamScanner

कवियों के बारे में एक खबर

ईश्वर ने देखा
कि धरती पर लोग हैं
इसी से वह संतुष्ट हो गया
ईश्वर ने तबाही के बाद
धरती की ओर देखा
बहुत कुछ नष्ट हो गया था,
फिर भी बचे हुए तो हैं
ईश्वर संतुष्ट हो गया।
राजा ने प्रजा की ओर देखा
बहुत से लोग परेशान हैं
पर बहुत से लोग आराम से हैं
राजा संतुष्ट हो गया,
कवि ने राजा और ईश्वर
दोनों से संतुष्ट होने का कारण
पूछ लिया
और कवि को कैद कर लिया गया।

****

Scanned with CamScanner

किताबें : एक और पहलू

किताबें इकट्ठी हो रही हैं
आदमी के घरों में
आदमी के दिमाग में
आदमी के आस-पास
देश, प्रदेश, क्षेत्र
हर जगह भाषा के भीतर
चल रही किताबों की भीड़ से
मासूम चेहरे वाले बच्चे
उत्साह से भरे नवजवान
और अनुभवों से भरे बूढ़े
उन किताबों को जानने के लिए
या पढ़ने के लिए
और ऐसा न कर पाने पर
आत्म ग्लानि से भरे हुए हैं?
क्या विमुद्रीकरण की तरह
कोई सरकार
गैर किताबीकरण
कभी करेगी,
कि संचित ज्ञान से
दुनिया के दिमाग को
थोड़ा मुक्त किया जाए
और तनावमुक्त किया जाए।

****

Scanned with CamScanner

बड़े शहर में कामगार

मैं तो समय में हूँ
और अभी भी टिका हूँ
काफी मशक्कत के बाद।
पर, कुछ क्या बहुत ज्यादा लोग
समय के बाहर होते जा रहे हैं।
आसमान में उड़ते विमान
और चकाचौंध में सने
देश-विदेश की, रौनकों को
वे कभी-कभी फुर्सत के क्षणों में
टी.वी. पर मोबाइल पर
या किसी जुगाड़ू उनके बीच के आदमी के पास
आ गए लैपटाप पर देखकर
यह महसूस करते हैं कि उन्हें
इस दुनिया से बाहर कर दिया गया है।
वे बड़े-बड़े होटलों के सामने
टुकुर-टुकुर
देखते
कुत्तों के मानिन्द
इस समय में
असहाय और दया के पात्र बनते जा रहे हैं,
मेरे समय का पहिया घूम रहा है
और वे इसको देख रहे हैं
इतना ही उनका हस्तक्षेप है

Scanned with CamScanner

शेष तो उनकी है अदम्य जिजीविषा
जिसके सहारे वे अभी भी काट लेते हैं
सर्दियों, गरमियों की ठंडी और गरम रातें
नींद और मच्छरों के बीच
वे जाग जाते हैं बड़े सवेरे
अपने भोजन का इंतजाम करने
और उसे खाकर कुछ बचाकर ले जाने के लिए
कि वे दोपहर में भी श्रम की आंत को?
कुछ मुहैया करा सकें
वहाँ उनके लिए बहुत से निर्धारित काम हैं
जैसे कि मेट्रो की लाइन बिछानी है
बिजली की अन्डर लाइन के लिए गड्ढे खोलने हैं
कि बिल्डिंग पर रस्सों के सहारे झूलकर
पेंट करना है,
वगैरह वगैरह।
इसके बाद भी वे जब काम से लौटते हैं
तो थक कर चूर हालत में
शराब, खैनी के सहारे
गाँव में रह गई बीबी, रह गए बच्चों को
याद करते हुए
समय काट देते हैं।
समय में वे हैं पर समय को उन्हें काटना है
खुद-को काट-काट कर।

****

Scanned with CamScanner

गीत

दिन कटते ही नहीं काटने से
लिखने पढ़ने
और बाँचने से।
कोई तो अज्ञात-बात है
खोज रहा है ईश्वर
भोर हुई कि शुरू हो गई
यात्रा अपने चरम बिन्दु पर,
पूरा जीवन बीत गया
पर मिला मुझे क्या
इस जीवन से,
दिन कटते ही नहीं काटने से
लिखने-पढ़ने
और बाँचने से।
बचे हुए जीवन में कुछ भी बचा नहीं है
थोड़ी सी साँसें बाकी है
मैंने उनको रचा नहीं है,
खाना, पीना, सोना-जगना
पैसों से परिवार चलाना
यही अगर सबकुछ है भाई
इससे तो मरना अच्छा है।
दिन कटते ही नहीं

काटने से
बचे हुए ये बचे हुओं का
हाल जानने से।
थोड़ा और समय बीतेगा
बचा-खुचा वह भी रीतेगा
चलने फिरने में भी बाधा
आनी है, यह सत्य दिखेगा
तब क्या होगा, सोच-सोचकर
मन होता जाता है व्याकुल
डर के मारे देर-देर तक
खुदा-खुदा करने से,
दिन कटते ही नहीं
काटने से,
लिखने पढ़ने
और बाँचने से।

****

Scanned with CamScanner

शब्द

मैं शब्दों को परिन्दों की तरह
उड़ता देखता हूँ
और चाहता हूँ उनको
धीरे से पकड़ लूँ
एक, दो, तीन
कई शब्दों को
मन के आकाश में उड़ता देखना
एक अनुभव है
पर इस अनुभव को
बाँटना भी एक काम है
शब्द तुम क्या हो
जिसके अनवरत आखेट में
मैं एक दिन मर जाऊँगा
तुम रह जाओगे।

****

Scanned with CamScanner

बुढ़ापा

क्या यही बुढ़ापा है कि
चुप हो जाओ
और बोलो तो
कोई सुने नहीं
बुढ़ापा कोई एक दिन में नहीं आया
दुनिया यही कहती है
क्या दुनिया बूढ़ी होती है?
क्या बुढ़ापे से दुनिया का
कोई सम्बन्ध है
क्या थकान
एक मात्रा का पर्याय है
क्या भूख, नींद और इच्छा का
अनुभव
बुढ़ापे में कुछ और तरह से होता है
प्रश्न क्या बुढ़ापे में अधिक होते हैं,
क्या उत्तरों का कम हो जाना
या न होना बुढ़ापा है?

****

Scanned with CamScanner

सपना ही सही

चलो मान लेते हैं कि
संसार सपना है।
पर सपने में भी तो
रहना है
दुःख सहना है
सुख करना है
दुःख को दूर करने का
प्रयत्न करना है,
सुख जितना मिलना है
वह तो मिलना है,
मेरे बच्चों!
मैं तो चला जाऊँगा पर
किसी भुलाने पर न आना
दुःख दूर करने की कोशिश
करते रहना
और मजे में जीना
सपना ही सही
इसे अच्छी तरह देखना
और आनन्द का अनुभव करना।

****

Scanned with CamScanner

ए.टी.एम. मशीन के सामने भिखारी

कैंट थाने
फिराक चौराहे के
ठीक मध्य में
बैंक ऑफ़ बड़ौदा
के जोनल आफिस के
प्रवेश-द्वार के
पचास कदम पीछे
ए.टी.एम. की मशीन है,
नोटबंदी में भी यह मशीन
पता नहीं कैसे अत्यन्त प्रामाणिक
जरूरतमंदों के लिए
नोट मुहैया करने वाली मशीन थी,
यह एक रहस्य है।
एक अधनंगा भिखारी
शहर के तमाम मंदिरों,
मजारों, गुरुद्वारों के आसपास
भीख न माँगकर
यहाँ बैठा रहता है।
उधर टहलने में
रोजमर्रा पिछले कई वर्षों से

Scanned with CamScanner

मैं उसे देखता हूँ
कई बार मैंने उसे कुछ सिक्के दिए भी
पर मैं सोचता रहा हूँ कि
क्या यह भिखारी है
चालाक है कि ए.टी.एम. से पैसा निकालने वाले
कम से कम यह तो नहीं कह सकते कि
उसके पास पैसा नहीं है?
अधिक से अधिक छुट्टे न होने का बहाना बना सकते हैं
भिखरी के पास
भिखारी होने के अलावा
कोई स्किल नहीं है
न कोई ए.टी.एम. कार्ड,
उसे कहीं भी नहीं जाना है कि
आधार कार्ड, आईडेंटी प्रूफ उसके पास हो,
उसका कटोरा
उसका ए.टी.एम. कार्ड
पैनकार्ड
और दुनिया में आने जाने का
जीने का वैध टिकट है।
ए.टी.एम.
अक्सर उस पर
रहम करता मुझे नजर आता है,
गो ए.टी.एम. निर्जीव मशीन है,
मैं नहीं जानता कि
ए.टी.एम. भिखारी

Scanned with CamScanner

व्यवस्था, सत्ता और जनता का
क्या रिश्ता है,
पर इतना जानता हूँ कि
न समझना ही
इस व्यवस्था में जीना है
और समझना जीते जी मर जाना है।

****

Scanned with CamScanner

रस्सी की शाश्वतता

एक दिन किताबों से उगेगा सूरज
रात भाग जाएगी
अंधेरा मिट जाएगा
एक दिन ईश्वरीय ग्रहों से निकलेंगे
दिव्य रश्मिधर
भीतर–बाहर खुशी का प्रकाश भर जाएगा।
एक दिन फिर से निकलेगा
समुद्रमंथन से अमृत
देवताओं और राक्षसों में ही नहीं
मनुष्यों में भी बराबर बँट जाएगा
सब अमर हो जाएंगे
केवल अन्य प्राणियों को नहीं मिलेगा
क्योंकि वे इन तीनों के आखेटक रहेंगे।
हम सब सपने देख रहे हैं
इच्छाएँ कर रहे हैं
लगातार दौड़ रहे हैं
किसी टेक्नोक्रैट के ऐसे
गम्भीर आविष्कार की प्रतीक्षा कर रहे हैं,
जो युद्ध मिटा दे
दीवारें गिरा दे
प्रकृति को इतना सुन्दर बना दे कि

बद्बू और विभीषिका खत्म हो जाए।
पर अभी तो यह इच्छा है
स्वप्न है
आगे और आगे
पीछे को छोड़कर
स्वप्न और इच्छा में
मनुष्य की नियति में
जीवन को बुनेगी
क्या रस्सी भी शाश्वत रहेगी।

****

Scanned with CamScanner

कुछ शेर

मुझे कहने की जल्दी है नहीं फिर आप ही कहिए
हमारे सामने आँखें उठाकर चुप नहीं रहिए।
जरा सा मुस्कराइए और कहिए कुछ इशारा तो
मुझे फिर देखिए मैं क्या करूंगा देखते रहिए
नहीं दूरी मुझे अच्छी लगी है कभी अपनों से
अगर यह हो सके तो फिर हमारे पास ही रहिए।
नहीं लज्जत है देह में मेरे जरा सी भी
मगर मेरी मुरादों में हमेशा रूबरू रहिए।

****

सभ्यता 'साधू' के ढंग पर
Scanned with CamScanner

सत्तर साल से

सत्तर साल से
चींटियों को रेंगते
पेड़ों को खड़े रहते
गिलहरियों को उनपर
चढ़ते, उतरते देख रहा हूँ
सत्तर साल से गाँवों, खेत, खलिहान
पगड़ी, मूछें, गमछे, खैनी
धान, गेहूँ, सरसों, चना
आमों का बौराना
गंध का उठना देख रहा हूँ
सत्तर साल से फागुन में
हवाओं के चलने से पेड़ों के पत्तों को
झरते हुए देख रहा हूँ
हट सुबह मस्जिद से
अल्लाहो अकबर
और मन्दिरों से घंटों की आवाज
सुन रहा हूँ
सत्तर साल से फूलों का खिलना
तोड़ा जाना या बूढ़ा होकर झर जाना
देख रहा हूँ
सत्तर साल से श्मशान

Scanned with CamScanner

और प्रसूति-गृह के फलों को
मृत्यु और शिशु के रूप में
देख रहा हूँ
सत्तर साल से बकरों का कटना
मुर्गों का जिबट होना
देख रहा हूँ
दूध का दही होना
सुबह होना, शाम होना
मछलियों का तैरना
उनमें से कुछ का शिकार होना
आदमी की फितरतों
और पशुओं-पक्षियों का
अपना-अपना पार्ट अदा करना
इसी रंगमंच पर देख रहा हूँ
और उनका स्वयंभू होना
महसूस करता हूँ
भूख, वासना
कुछ पाने में खुशी
खोने से दुःख के अनुभवों को
छाती में महसूस कर रहा हूँ।
सत्तर साल से लोकतंत्र में
न्याय की माँग करने वालों की
चीख
और सत्ताओं का अत्याचार
कुछ भी न कर पाने की मजबूरी से

Scanned with CamScanner

मन का टूटना
अनुभव कर रहा हूँ।
सत्तर साल से क्या-क्या देख रहा हूँ
वह भी जो कहा
वह भी जो नहीं
पर आप बताएँ मेरे पाठक
कहीं हम दोनों देखने के बावजूद
सिर्फ शब्द तो नहीं हो रहे हैं?

****

Scanned with CamScanner

सफल लोगों के प्रति

तुम सोचते हो
कि तुमने पा लिया
वह समय
जो तुम्हें ऐसे छू रहा है
जैसे कि तुम्हारा नन्हा सा बच्चा
जिसकी उँगलियों में
तुम्हारे भविष्य की अँगूठी
सोने में बनकर चमकने वाली है,
तुम सोचते हो तुम्हारे पाँवों की धरती
अब तुम्हारे पाँवों के नीचे
एक कालीन हो गई है
और तुम सुख से चल सकते हो,
या यहीं कोई कुर्सी लगवाकर
बैठे सकते हो
मित्रों से हास-परिहास करते हुए
अपने संसद के भोजन
और भोग की चर्चा करते,
तुम साचते हो कि
यह जो तुम्हारे शीश पर
आकाश है
तुम्हारे लिए उड़ने का स्पेस देगा

Scanned with CamScanner

और तुम उड़ सकते हो
साक्षात् वायुयान की तरह
तुम्हारा जिन्दा रहना बहुत महत्वपूर्ण है
तुम सोचते हो,
सोचते हो.....
इसके आगे, कुछ नहीं कहूँगा
क्योंकि कहना और सुनना
दोनों नामुमकिन है
हाँ यहाँ से और अभी
तुम्हारे शब्दों से अपने शब्दों को
अलग करना होगा
क्योंकि मेरे जैसे असफल लोगों के पास
और भी चुनौतियाँ हैं
जिन्हें तुम्हारे जैसे सफल लोगों के बिना
झेलना है और उनका सामना करना है।

****

Scanned with CamScanner

अच्छी कविता

अच्छी कविता भी
कवियों की चालाकी है
जैसे सफलता
चालाक लोगों की फितरत
अच्छी कविता लिखकर
कोई कवि सार्थक नहीं होता
जब भी वह खराब कविता लिखेगा
असली बात वह कहेगा।
अच्छी कविता को गाली बनाने से बचाने में
शताब्दियों से लगी हैं कवियों की
चेष्टाएँ,
इसी में खत्म होती जा रही हैं
असली कविता की संभावना
अच्छी कविता
और असली कविता में फर्क है
पहचान अच्छी कविता है।

****

सभ्यता 'साधू' के लेख पर

Scanned with CamScanner

लौटने पर दुःख स्मृति

उधर मत देखो
उधर दुःखी लोग हैं
उनका दुःख दूर करने का
तुम्हारे पास इतना थोड़ा उपाय है कि
तुम दुःख भी नहीं दूर कर पाओगे
और स्वयं दुःखी हो जाओगे।
दुःख इतना सनातन हैं
कि अद्यतन का बोध कर लो।
चलो घर चलो
इसीलिए तुमने बना रखा है एक घर
जहाँ दुःख दीवारों के कारण
सीमित हो जाता है।

****

Scanned with CamScanner

चुप

अर्थ में चुप हूँ
अर्थ हो न हो
व्यर्थ में चुप हूँ
व्यर्थ हो न हो
होने में चुप हूँ
होना हो न हो
चुप हूँ कि चुप
चुपचाप हूँ इतना
कि जितना स्वयं में
होना।
देखता हूँ दृश्य
जैसे चुप हुआ जाता सब कुछ
और कोई शब्द बिल्कुल
पास न आता।

****

Scanned with CamScanner

वह एक गाँव का गरीब आदमी

मैंने सुना है
मेरे गाँव में
एक गरीब आदमी था
जैसे ही उसे लगा कि
वह बूढ़ा होने के करीब है
वह इधर-उधर से
लकड़ियाँ इकट्ठा करने लगा,
पूछने पर बताता था कि
मेरी चिता जब
जलाने की होगी
तो काम आएंगी,
लोग हंसते थे,
मैंने यह बात जब सुनी
तो मुझे खयाल आया कि
मैं तो धन इकट्ठा कर रहा हूँ
पद और प्रतिष्ठा
क्या इससे कोई चिता
जलेगी,
और जलेगी।
तो क्या इससे मेरी
काया जलेगी,
मैं उसे आदमी को
बुद्धिमान मानता हूँ
और अपने को महामूर्ख!

****

Scanned with CamScanner

चन्द तुक बन्दियाँ हैं तो देख

आस है तो देख लेते हैं
वर्ना क्या खाक देखते होते।
कान है तो हम सुना करते
वर्ना क्या खाक हम सुना करते।
जो मेरी सांसें हैं वह नहीं मेरी
आती जाती है हम किया करते।
पा गए देह तो हैं, वर्ना
खाक धरती पर हम फिरा करते।
कुछ नहीं है अपने वश में यार
यों ही हम हैं तुम हो हुआ करते।

****

Scanned with CamScanner

जीने के लिए

जीने के लिए इतनी चालाकी
अच्छी नहीं लगती,
सुबह-सुबह उठो
कुलधर्म निभाओ
संध्या करो
तर्पण करो
देवराधना करो
शालिग्राम नहलाओ
पाठ करो,
जल्दी से कपड़ा पहनो
टहलने जाओ कि स्वास्थ्य ठीक रहे,
समय से नाश्ता
समय से दवाएँ
लेते रहो,
जरा भी तबियत बिगड़े तो
डाक्टर को दिखाओ,
इतना 'इनवाल्व' रहो
अपने घर, परिवार में
नौकरी में, इनकम में, पेंशन में
ईमान में,
लोगों को फोन करो

Scanned with CamScanner

लोगों के फोन सुनो
न्यौता में जाओ
मरनी करनी में जाओ सम्वेदना व्यक्त करो
मरने से डरो
ईश्वर को याद करो।
जीने के लिए इतने उपचार
अच्छे नहीं लगते।
जन्म और मरण के बीच
एक अजीब सी हैरत
यहीं जिन्दगी जिओ,
न कोई कारण समझ में आए
न होने वाला परिणाम
सिर्फ जीओ
और मतलब न समझो,
इतनी मूर्खता सही नहीं जाती।
कभी उस स्त्री के पीछे
कभी इस स्त्री के पीछे
कभी धन के लिए
कभी सुख प्रतिक्षा के लिए
यहाँ वहाँ प्रयत्न करो
तो कुछ पाओ
बराबर संतुष्ट रहो,
इतनी असंतुष्टता सही नहीं जाती।
प्यार की खातिर लिखो
तालियाँ बजवाओ

सभ्यता 'साधू' के ठेंगे पर
Scanned with CamScanner

छपों अखबार में, पत्र में, पत्रिका में
किताब लिए,
करो समाज के भूत, वर्तमान, भविष्य का
विश्लेषण,
अनावश्क शब्दों को
मन के आकाश में सरकाओ
या कभी गूँगे, बहरेपन को जगाओ।
दया करो, दया के पात्र बनने की
नियति भी झेलो
दोनों बातें सही नहीं जाती।
कहाँ तक दें बयान
किसके सामने
कविता के हल्के में
बार-बार जाओ
और कुछ न पूरा कह पाने का दर्द सहो
इतना दर्द सहा नहीं जाता।

****

Scanned with CamScanner

सब्जी खरीदती औरतें

मोहल्ले में ठेले वाला
तो सुन्दर नहीं होता
पर उसके ठेले पर सजे टमाटर
शिमला मिर्च, परवल, आलू,
लौकियाँ, कुम्हड़े, प्याज और मूलियाँ
बेहद खूबसूरत होती हैं।
औरतें सब सुन्दर भले यहाँ
वैसे जैसे निजी रूप में
पर बुजुर्ग और जवान
दोनों प्रकार की औरतें
जब सब्जी खरीदती हैं
भाव-ताव करती हैं
तो मुझे बहुत अच्छी लगती हैं।
मैं जब भी गुजरता हूँ ठेले वाले के पास
आकर खड़ी औरतों को देखता
तो मुझे बहुत अच्छा लगता है।
शाम की जिजीविषा का सम्पूर्ण स्वाद है
सब्जी का खरीदा जाना
जीने में इस खूबसूरती को निहारता-निखरता
अपने मुहल्ले में बूढ़ा हो रहा हूँ
मुझे अच्छा लगता है ऐसी शामों को जीना

सभ्यता 'साधू' के ठेंगे पर
Scanned with CamScanner

और स्वयं की सब्जी खरीदना
यह कोई न योग है, न हरी स्मरण,
न किसी सुन्दरी से प्यार
पर दूसरे से कम भी नहीं हैं
ऐसी हर शाम
और मेरा सब्जी खरीदना।

****

Scanned with CamScanner

ईश्वर करुणा निधान नहीं है

यदि होता वह करुणा निधान
तो इतनी हत्याओं का साक्षी नहीं रहता
होता वह यदि भक्तवत्सल
तो अपने बच्चों को भूख से मरते नहीं देखता
होती यदि उसके अन्दर न्याय की प्रवृति तो
इतने बेगुनाह जेल में नहीं होते
होती यदि कोई भी स्त्री के प्रति सद्भावना
तो वह बलात्कारों का भी साक्षी नहीं बनता
ईश्वर है तो क्या
नहीं है तो क्या
वह एक डरे हुए जीव का सहारा है
कि काट ले वह उसका नाम लेकर
अपना दुर्भाग्य अपनी आपदा
ईश्वर को घूस कम नहीं दिया भक्तों ने
न कम चापलूसी भी की
पर वह केवल उन्हीं पर
मेहरबान रहा जो चालांक थे
कभी किसी मेहनतकश जांगर पेरने वाले
व्यक्ति पर
उसने दया नहीं की
न दासों पर, न कुलियों पर

Scanned with CamScanner

न अत्यन्त पूँजीहीन मनुष्य पर
वह ऐसा कुछ नहीं करता कि
उसकी भगवत्ता को नमन किया जाए
पर क्या करे आदमी
वह करता है
क्योंकि उसके बाप-दादे
यही करते आए हैं।

****

Scanned with CamScanner

दुनिया

मछलियों को बगुले पकड़ लाते हैं
क्योंकि वे छोटी हैं
पेड़ पर बैठ कर खाते हैं
लड़कियाँ मजबूत लड़कों की
भुजाओं में आ जाती हैं
मुकदमा बाद में होता है
पर वे निर्णीत हो जाती हैं
क्योंकि वे कमजोर हैं।
आदमी दिनभर पत्थर तोड़ता है
बदले में तीन सौ रुपया पाता है
शाम को दारु पीकर खत्म कर देता है
और बीमार होने पर किसी के भी आगे
हाथ पसारता है
क्योंकि वह कमजोर है
गरीब शब्द कमजोर का पर्याय
व्याकरण में भले न हो
दुनिया में है
यह दुनिया ऐसे ही चलती है
बस चलती है
और आप गौर न करें
यही कहती है।

****

Scanned with CamScanner

नदीं में बाढ़

नदीं में बाढ़ आई है तो क्या हुआ
पूरा गाँव बहा ले जाएगी
लोग बह जाएँगे
तो क्या हुआ
जो बच जाएँगे
मिलकर गाँव फिर बना लेंगे
मौत आएगी तो आए
बारी-बारी से ही तो आएगी
और बहुत लोगों को छोड़ देगी
बचे हुए लोग मर गए लोगों को मरघट पंहुचा देंगे
कर देंगे
जरूरी क्रिया-कर्म जीवन चल निकलेगा
पेड़ पत्ते फिर उगेंगे
कीड़े-मकोड़े
कुत्ते पशु
और सब बचे हुए लोग
आग भूख और पानी
नींद हवा साँस
और सुरक्षा की मच्छारदानी
में पड़े रहेंगे
बाढ़ आए कोई तो बच जाता ही है
बाढ़ उतर जाती है
जैसे दुकान रोज रात को बढ़ा दी जाती है
कल खुल जाने के लिए।

****

Scanned with CamScanner

संतापराध

वही रहते हैं जमे
धारती को पावों के पँजों से
पकड़े
कहीं नहीं जाते
टूरिज्म इनके लिए बेकार है,
उनके पास कोई आ जाए
तो खुश होते हैं
उनके पास से चला जाए
तो उदास हो जाते हैं
पेड़ो पर फल लगते हैं
वे गिर जाते हैं
फूल खिलकर मुरझा जाते हैं
पेड़ को काटने जाओ तो वह खिलता भी नहीं
पेड़ एक संत होता है
जो केवल दूसरों को
कुछ-न-कुछ देता ही है
ऐसे संत को खत्म करना
सोचो
कितना बड़ा संतापराध है।

****

Scanned with CamScanner

पेंशन

योग्यता?
जीना।
अयोग्यता?
मर जाना।

****

Scanned with CamScanner

परिचय

अनंत मिश्र

जन्म : 18 अगस्त 1946, बेलोही, महराजगंज उत्तर प्रदेश

विधाएँ : कविता, निबंध, आलोचना, लेख

मुख्य कृतियाँ

कविता संग्रह : एक शब्द उठाता हूँ (विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी), हमारे समय में (विजया प्रकाशन दिल्ली) इसके अतिरिक्त अनेक पत्र–पत्रिकाओं में कविताएँ प्रकाशित

निबंध संग्रह : ये शब्द इसी जनपद के हैं (स्वतंत्र प्रकाशन)

आलोचना : स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कविता (प्रकाशन संस्थान, दिल्ली)

फोन : 0551–2340419, 09450441227

शिवालिक प्रकाशन

27/16, शक्ति नगर, दिल्ली-110007

Ph./Fax: 011-42351161

e-mail: shivalikprakashan@yahoo.com

website: shivalikprakashan.in

ISBN 93-8719554-6

₹ 225.00

Scanned with CamScanner